गोमाता की चिकित्सा

वंदेमातरम्

भारत देश का आधार आदिकाल से गोमाता ही है | ऐसा हमको हमारे प्राचीन ग्रंथो से पता चलता है | गोमाता की दुर्दशा पिछले ३००-४०० वर्षो से काफी बढ़ी है | मुगलों के समय भी गाय की इतनी ज्यादा अच्छी स्थिति नही थी फिर अंग्रेजो के आने के बाद तो गाय की स्थिति बिलकुल गिर गयी |और अब पिछले ७० वर्षो से तो .....दयनीय स्थिति हो गयी गाय की | ऐसी स्थिति होने के बावजूद कोई दया नही करता इस गोमाता पर |

दयनीय स्थिति अर्थात् गाय पर भांति भांति के अत्याचार हो रहे है गोमाता पर, जैसे उसकी हत्या करके उसको नष्ट करना, खाना उसको ऐसा खिलाना जिससे वह निरंतर बीमार ही होती रहे माने जल्दी-जल्दी बीमार हो | मतलब उसकी रोगप्रतिकारक क्षमता में कमी लाना आदि और बीमार होने के बाद भी उसे एलोपैथी की वो दवाईयां देना जो एक्सपायर हो चुकी हो मतलब कोरा जहर उसे दवाई के माध्यम से देना |

इसी अत्याचार को ध्यान में रखकर मैंने श्री निरंजन वर्मा जी को सुनकर ये मन संकल्प किया की अब तो गोमाता को इस अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए एक ऐसी पुस्तक बनानी पड़ेगी जो गोमाता के लिए वरदान साबित हो | मित्रो जितना निरंजन भाई ने गोमाता को पढ़ा समझा है उतना शायद मेरे बस की बात नही फिर भी मैं लगा हुआ हु उसी दिशा में मैंने अब तक जितना पढ़ा है गो पालन के बारे में उसका कुछ जरूरी हिस्सा मैंने इस पुतक में डाल दिया है | केवल चिकित्सा और गोपालन के बारे में|

गोमाता की चिकित्सा के आयुर्वेदिक, होम्योपैथीक तथा जीवन व्यवहार के सरलतम नुस्खे हैं इसमें ताकि हमारी गाय बच जाए| मात्र ३० पन्नो की ये किताब है | अंतिम और महत्वपूर्ण बात यह है कि पुस्तक में जो नुस्खे तथा इलाज हैं वे केवल और केवल भारतीय देसी गाय के ही अनुकूल हैं, जर्सी आदि विदेशी काऊ का हमको मालुम नही है क्योकि वह हमारे देश की नही है मतलब उसका भूगोल पूरी तरह से अलग है|

गौसेवक

आर्य गौरी शंकर

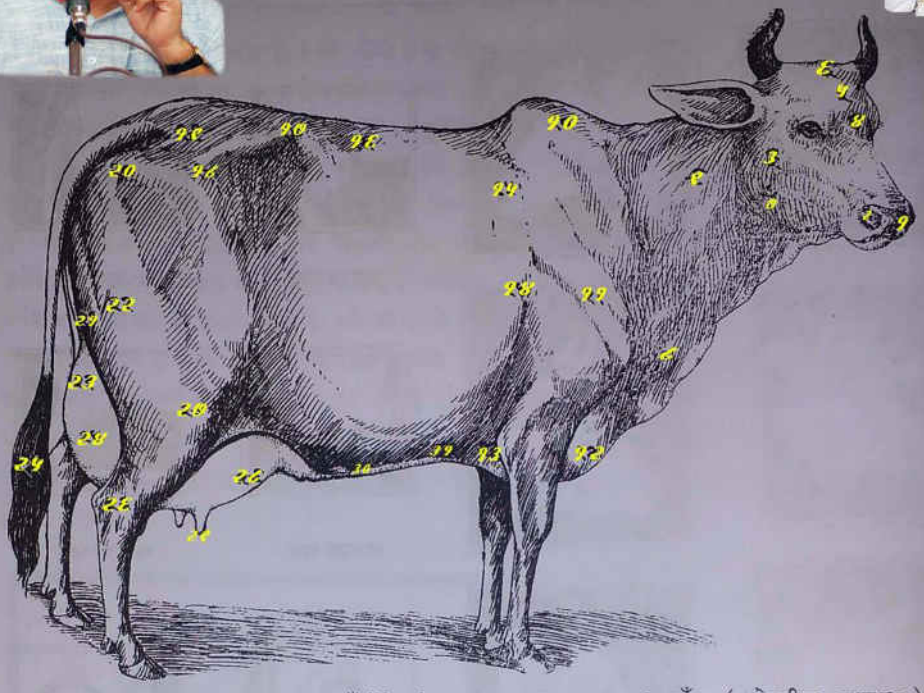

१–थूथुन, २–नथुना, ३–जबड़ा, ४–आँखोंके बीचका भाग, ५–ललाट, ६–चाँद (खोपड़ीका मध्यभाग), ७–गला, ८–गलकम्बल, ९–गर्दन, १०–थूहा, ११–कंधा, १२–छातीका अगला भाग, १३–छाती, १४–हृदयका घेरा, १५–कंधोंके नीचेका भाग, १६–कमर, १७–पुट्ठा, १८–कूल्हा, १९–पूँछकी जोड़, २०–पीठकी हड्डियाँ, २१–पीठ और स्तनके बीचका भाग, २२–रान, २३–थनका पिछला जोड़, २४–थनका पिछला भाग, २५–पुच्छाग्र, २६–घुटना, २७–घुटनें और जाँघके बीचका स्थान, २८–कोख, २९–थनका अगला भाग, ३०–दुग्धशिराएँ, ३१–दुग्धकूप ।

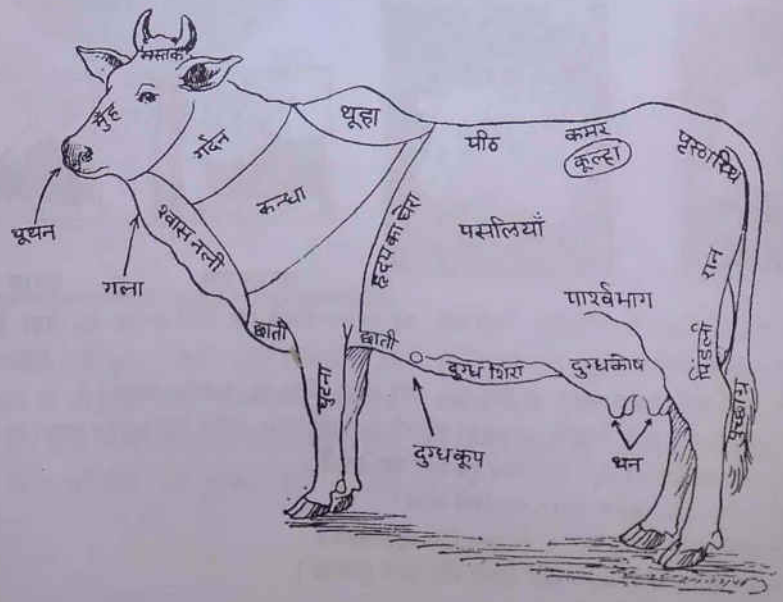

गौ के दांत

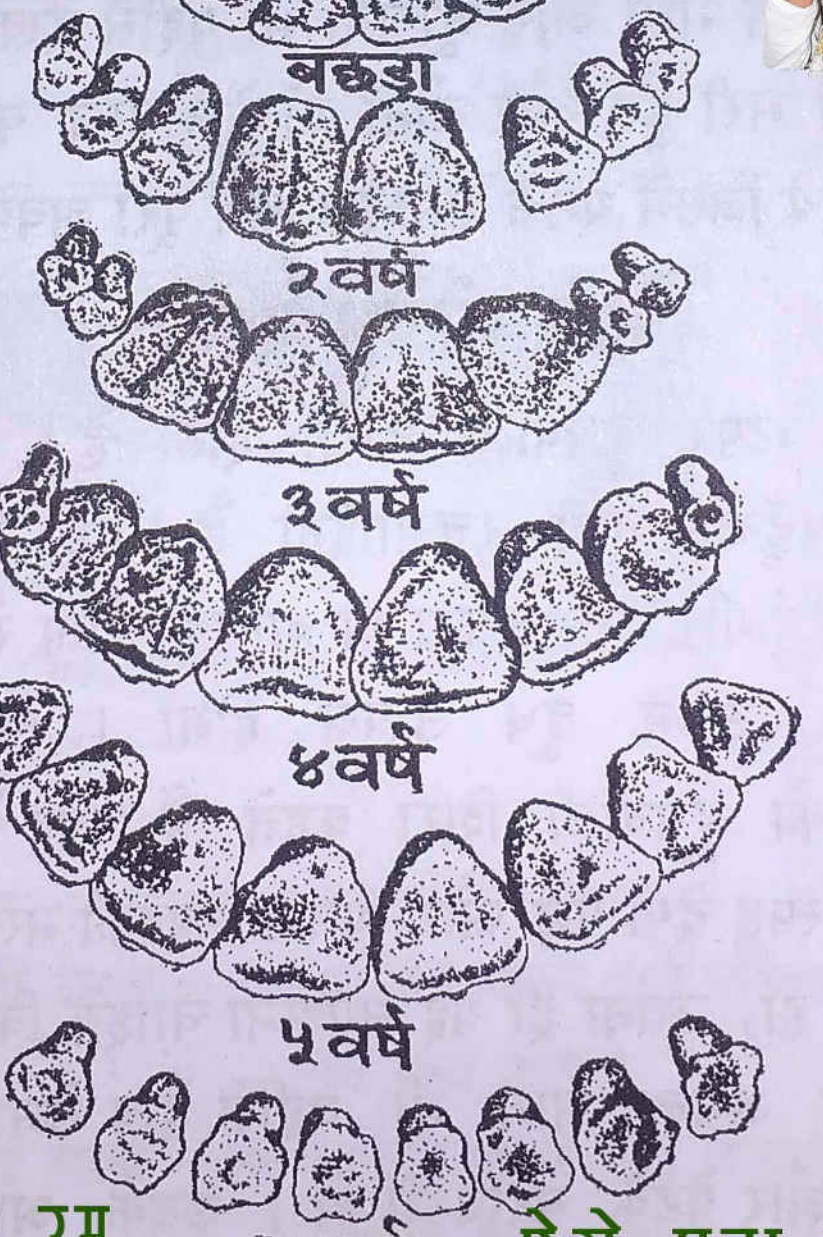

गाय की उम्र ऐसे पता करे

उत्तम गायके अवयवोंकी व्याख्या

गायकी पहचान उसके अवयवोंको देखकर करनी चाहिये।

(१) **रंग**—सर्वाङ्ग-काली श्यामा एवं कपिला गाय सर्वोत्तम मानी जाती है। लाल, बादामी या चितकबरे रंगवाली गाय भी श्रेष्ठ मानी गयी है। सफेद-मोतिया या भूरे आदि रंगकी भी गायें अच्छी होती हैं।

(२) **चर्म**—पतला, चिकना और रेशम-से नर्म बालोंदार हो।

(३) **ऊँचाई**—जातिके अनुसार काफी बड़े कदकी हो।

(४) **लंबाई**—शरीर लंबा और छाती चौड़ी होनी चाहिये।

(५) **सिर**—छोटा, मस्तक चौड़ा और गर्दन लंबी तथा पतली हो, किंतु साहीवाल आदि जातियोंके पशु भारी और छोटी गर्दनवाले होते हैं।

(६) **सास्ना**—भारी तथा झालरदार और ठाटी खूब विकसित हो।

(७) **सींग**—छोटे और चिकने तथा जातिके अनुसार आकारवाले हों। कपिला गायके सींग हिलते या नीचेकी ओर झुके हुए और चपटे होते हैं।

(८) **कान**—उभरे हुए और बड़े हों, उनके भीतरकी चमड़ी मुलायम तथा पीले रंगकी हो।

(९) **आँखें**—साफ, बड़ी, ममतामयी एवं स्निग्ध हों।

(१०) **नाक**—साफ हो और उससे पानी न बहता हो।

(११) **ओठ**—कोमल, सटे हुए एवं ताँबेके-से लाल रंगके हों।

(१२) **दाँत**—सफेद मजबूत एवं कीड़े-रहित हों।

(१३) **जीभ**—साधारण लंबी, कुछ लाल-सी, मुलायम और काँटेरहित हो।

(१४) **गला**—साफ, सुरीला और ऊँचे स्वरवाला हो।

(१५) **पूँछ**—पतली, काली चौंरीवाली और जातिके अनुसार लंबी एवं जमीनको छूती हुई हो। सफेद चौंरीवाला लक्षण किसी नस्लमें ही अच्छा किंतु अधिकतरमें दोष माना जाता है।

(१६) **पुट्ठे**—चौड़े, खुले हुए, स्थूल और ऊँचे हों।

(१७) **धुन्नी**—(पेटके नीचेकी चमड़ी) बड़ी, फैली हुई और मुलायम हो।

(१८) **जाँघें**—चौड़ी और फासलेपर हों।

(१९) **पैर**—सुडौल, मजबूत एवं लंबे हों, किंतु चलते समय आपसमें न लगते हों।

(२०) **खुर**—सटे हुए, गोल एवं मजबूत हों और इनके भीतरकी चमड़ी पीली एवं मुलायम हो।

(२१) **ऐन**—खुला, चौकोर, चौड़ा तथा बड़ा हो। अगले पैरोंकी तरफसे उभरी हुई रस्सीके आकारकी, दूधकी नसें ऐनकी तरफको आती दिखायी पड़ती हों।

(२२) **थन**—लंबे, मुलायम और दूर-दूर हों। चारों स्तन एक-से और बड़े हों।

(२३) **शरीर**—नीरोग और भरा हुआ, किंतु मोटा न हो। मोटी गायमें केवल मांस ही ज्यादा बढ़ जाता है, जिससे उसकी दूध देनेकी शक्ति कम हो जाती है।

(२४) **पसमाव**—(दूधका बहाव) एक-सा और मोटी धारका हो और बरतनसे टकराकर घर-घरकी-सी गम्भीर ध्वनि करनेवाला हो।

(२५) **दूध**—पीली झलकवाला और गाढ़ा हो।

(२६) **स्वभाव**—गम्भीर, सीधा, प्रेममय एवं उत्तेजना-रहित हो। वह ऐनके छूनेपर क्रोध न करनेवाली और सबसे सरलतापूर्वक दुहा लेनेवाली हो।

(२७) **चाल**—मन्द और सीधी हो।

(२८) **ज्ञातवंशज**—दुधार गायों तथा बलिष्ठ साँड़ोंके कुलकी हो।

(२९) **गुण**—जातीय नस्लके सभी गुण शुद्ध एवं पूरे हों।

(३०) **रुचि**—सभी किस्मके अच्छे चारे-दानेको

रुचिपूर्वक खानेवाली हो।

(३१) गर्भ—वह श्रेष्ठ साँड़से गाभिन हुई हो।

उदर, कुक्षि, कूल्हे दोऊ, माथा, छाती, पीठ।
ऊँचे उभरे अंग छै, यह शुभ लच्छन दीठ॥

युगल नेत्र अरु कर्ण हों, विस्तृत और समान।
मस्तक ऊँचो लेखिये, सब बिधि उत्तम जान॥
गल-कम्बल गर्दन तथा, पूँछ रु थन दोउ रान।
लम्बे चौड़े अङ्ग लखि, उत्तम कहत सुजान॥

दुधार गौकी परीक्षा

हमलोगोंमेंसे बहुतोंको इसका अनुभव हुआ होगा कि गौ रखनेकी इच्छा होनेपर भी अच्छी गौ न मिलनेसे जैसी-तैसी गौ रखकर पीछे कष्ट ही होता है और यही कहना पड़ता है कि बाज आये इस झगड़ेसे। पर ऐसा इसीलिये होता है कि हम गौ खरीदते समय यह देख नहीं लेते कि गौ दुधार है या नहीं। इस विषयकी कोई जानकारी ही नहीं होती। ग्वाले जानते हैं, परखते हैं, पर खुलकर सब भेद नहीं बतलाते। इसलिये जरूरी है कि हमलोग इसकी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लें। जानकार लोगोंने दुधार गौकी पहचानोंका संग्रह किया है। विशेषज्ञोंको अवश्य इसमें कोई नया विशेष ज्ञान नहीं मिलेगा, पर सर्वसाधारणके लिये ये पहचानें उपयोगी होंगी, इसलिये यहाँ दी जाती हैं।

गौके बगलमें खड़े होकर देखना

गौके बगलमें खड़े होकर देखनेसे पहले उसका आकार दीख पड़ेगा। कंधोंसे लेकर पूँछतक उसकी लंबाई काफी होनी चाहिये। पीठ लचकी हुई न हो, मेरुदण्ड ऊपर उठा हुआ हो और उसके मनके अलग-अलग दिखायी दें। पेटका घेरा जितना ही बड़ा होगा, उतना ही वह अधिक खानेवाली होगी और उतना ही दूध भी अधिक देगी। यह ध्यानमें रहे कि कम खाकर अधिक दूध देनेवाली गौकी सृष्टि अभीतक नहीं हुई है। पेटकी पसलियाँ जब उठी हुई और फैली हुई होती हैं, तब पेटमें चारा-पानीके लिये अधिक अवकाश होता है। दूध देनेवाली गौके शरीरपर मांस अधिक नहीं होता, क्योंकि वह जो कुछ खाती है, उससे दूध ही अधिक निर्माण होता है। हाँ, गाभिन होनेपर पौष्टिक पदार्थ खानेको मिलें तो वह अवश्य ही पुष्ट होती है। गौके बदनपर हाथ फेरकर देख लेना चाहिये। यदि खाल मुलायम और पतली हो तो यह अच्छा लक्षण है, यदि खाल मोटी हो तो यह समझना चाहिये कि रक्ताभिसरण ठीक नहीं हो रहा है। और रोएँ घने हों तो समझना चाहिये कि इसकी परवरिश ठीक तरहसे नहीं हो रही है और इसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।

पीठके पीछे खड़े होकर देखना

पीठके पीछे खड़े होकर गौकी ओर देखनेसे पेटका भराव दीख पड़ता है। पुट्ठों और नितम्बोंकी चौड़ाई सामने आ जाती है। पुट्ठोंका चौड़ा होना यह सूचित करता है कि गर्भाशयमें अर्भकका पोषण ठीक तरहसे होता है। गौके थनका पिछला भाग और चूँचियाँ भी यहाँसे दीख पड़ते हैं। गौकी जाँघें भरी हुई और दोनों जाँघोंके बीच काफी अन्तर होना चाहिये, जिसमें थनके समानेके लिये पूरा अवकाश हो।

पेटके नीचेसे देखना

गौके पेटपर 'दूधवाली शिरा' होती है। वह थनकी ओर रक्त पहुँचानेवाली रक्तवाहिनी है। यह जितनी लंबी और बड़ी होगी, थन उतना ही अधिक पोसा जायगा और उतना ही उसमें दूध उत्पन्न होगा। इसीलिये इस रक्तवाहिनीको 'दूधवाली शिरा' कहते हैं। यह पेटके नीचे जितनी ही स्पष्ट दीख पड़े और थनके ऊपरकी नसें भी जितनी स्पष्ट लक्षित हों, उतना ही यह समझना चाहिये कि गौ दुधार है। थनका अगला भाग भी यहाँसे देख लेना चाहिये। थन बड़ा और पेटके बराबरमें हो। लटक आया हुआ या मांसल न हो और उसपरकी नसें साफ दीख पड़ें। आगे और पीछे दोनों ओर थन पेटसे सटा हुआ हो। चारों चूँचियाँ बराबर फासलेपर और एक-सी बढ़ी और भरी हुई हों। बहुत पतली

चूँचियोंसे, जो अँगुलियोंमें भी न आयें, दूध भी कितना निकलेगा। अन्य सब लक्षणोंकी अपेक्षा थन और चूँचियोंकी परखमें ही अधिक ध्यान देना चाहिये।

गौके सामने खड़े होकर देखना

सामनेसे गौका मुँह दीख पड़ता है। उसका जबड़ा और नथुने चौड़े हों, आँखें पानीदार हों, गौ सीधी है या नहीं, यह उसका मुँह देखनेसे पता चलता है। दाँतोंसे उसकी उम्रका अनुमान होता है। गायके नीचेवाले जबड़ेमें ८ [दूधिया] दाँत होते हैं। दो वर्ष बाद बीचके दो [दूधिया] दाँत गिर जाते और उनके स्थानमें दो बड़े [स्थायी] दाँत निकलते हैं। इस तरह हर साल दो-दो बड़े दाँत निकलते और पाँच वर्षमें आठों बड़े [स्थायी] दाँत पूरे हो जाते हैं। पाँच-छः वर्षके बाद ज्यों-ज्यों गौ ढलने लगती है, त्यों-त्यों उसके दाँत भी घिसते जाते हैं और खूँटी-सरीखे होने लगते हैं। गायके ऊपरके जबड़ेमें दाँत नहीं होते। इन नीचेके दाँतोंसे घास-चारा काटकर वह पेटमें उतारती है और पीछे दोनों जबड़ोंके किनारेकी मजबूत दाढ़ोंसे चबाकर (जुगाली करके) निगल जाती है।

गौके कानोंमें यदि कुछ पीली-सी चमक दिखायी दे तो समझना चाहिये कि गौ दुधार है और उसके दूधमें मक्खनका अंश अधिक है। गौका गलकंबल पतला होना चाहिये, इससे यथेष्ट वायु अंदर खींचनेमें उसे सुविधा होती है और वह नीरोग रहती है। पेटका घेरा भी सामनेसे दीख पड़ता है। पिछले पैरोंकी तरह अगले पैर भी दूर-दूर हों।

पीठपरसे देखना

पीठपरसे नीचे देखनेसे भी पेटका आकार और पुट्ठे दीख पड़ते हैं। पुट्ठा एकदम उतारदार न हो। यदि दुहती गाय खरीदी जाय तो बिना अन्तर दिये तीन-चार बार स्वयं दूध निकालकर देख लेना चाहिये। दूध निकालते समय पात्रमें धार गिरनेका जो शब्द होता है, उसके द्वारा भी गाय दुधार है या नहीं, इसकी परीक्षा होती है। थनमें यदि दूध अधिक होगा तो पात्रमें धारके गिरते समय जोरसे शब्द होगा। यदि दूध अधिक न हुआ तो धार पतली होगी और शब्द भी धीमा ही होगा। पाश्चात्त्य पद्धतिसे गौकी परीक्षा करनेकी एक और रीति है। जैसे—

१-पीठपरसे देखनेपर गायका शरीर गलेसे पीछेकी ओर दोनों तरफ चौड़ा होता चला गया हो तो यह लक्षण अच्छा है। ऐसी गायके उदर तथा पाकाशयका पूर्ण विकास हुआ समझा जाता है। वह भरपूर खा सकती है और पचा भी सकती है।

२-बगलसे देखनेपर गायके गलेसे पूँछतकका भाग चढ़ता और गलकंबलसे थनतकका भाग उतरता हुआ चला गया हो। ऐसी गायका थन बड़ा होता है और उसमें दूध भी भरपूर होता है। उसी प्रकार गर्भाशयमें गर्भके विकासके लिये पर्याप्त स्थान मिल जाता है और उससे बच्चा बलिष्ठ होता है।

३-सामनेसे देखनेपर दोनों तरफ गौका शरीर ऊपरसे नीचेकी ओर चौड़ा होता हुआ दीख पड़े। इससे गौका फुफ्फुस और हृदय पूर्ण विकसित तथा बलिष्ठ हुआ समझना चाहिये।

सारांश यह कि ऊपरसे, बगलसे अथवा सामनेसे किसी ओरसे भी देखनेपर गौका शरीर सब ओरसे तिहरे पच्चर (Triple Wedge) की तरह (एक ओरसे दूसरी ओर बारीक होता हुआ) दिखायी देना चाहिये। उसका यह आकार जितना पूर्ण होगा, उतनी ही वह अधिक दुधार होगी।

(गो-ज्ञान-कोश)

गोबरसे प्रार्थना

अग्रमग्रं चरन्ती नामोषधीनां रसं वने। तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगाश्च शोकांश्च पापं मे हर गोमय॥

वनमें अनेकों ओषधियोंके रसको चरनेवाली वृषभपत्नी (गायों)के पवित्र और कायाकी शुद्धि करनेवाले हे गोबर! तू मेरे रोग, शोक और पापोंका नाश कर।

साँड़ोंके लक्षण और उनकी परिचर्या

चुनाव—गोशालाके लिये श्रेष्ठ, मूल्यवान् एवं सर्वगुण-सम्पन्न साँड़के चुनावमें अत्यन्त सावधानी और सतर्कता रखनी चाहिये। साँड़ ही शालाका प्राण एवं भविष्य है। साँड़पर ही गायोंके दूध देनेकी शक्ति और आगे आनेवाली नस्ल निर्भर रहती है। एक ही साँड़ अनेक बछड़े और बछियोंका पिता बनता है और इस दृष्टिसे वही शालाका प्रधान पशु है। साधारण गायकी नस्ल भी बढ़िया साँड़के संयोगसे सुधारी जा सकती है।

शालामें एक उत्तम साँड़ अवश्य होना चाहिये। साँड़के न होनेसे गायोंका सोया मारा जाता है। बार-बार गरम होनेपर भी गाय यदि बर्धायी न जाय, तो वह निर्बल या मांसल हो जायगी और उसे फिरसे गरम होनेमें समय भी लगेगा। शालामें साँड़के न होनेसे गाय और पालक दोनोंकी हानि होगी। पालकके पास केवल एक-दो गायें हों, तो भी किसी अच्छी गोशालाके सुपालित साँड़से ही उनको हरी करना चाहिये। इधर-उधर घूमते हुए, अज्ञात जाति एवं कुलवाले, रोगी, बुड्ढे और रक्षकरहित साँड़से अपनी गायको कदापि हरी न करायें। साँड़का लालन-पालन अन्य सब पशुओंसे बढ़कर होना चाहिये। उत्तम साँड़से गाभिन होनेपर गायमें दूध देनेकी शक्ति बढ़ जायगी।

यदि साँड़ बढ़िया न हो, तो बढ़िया नस्लकी दुधार गाय भी हर-ब्याँतमें कम दूध देने लगेगी और उसके बछड़े-बछिया उससे निर्बल होंगे।

साधारणतया यदि काफी दूध चाहिये और साथ ही अच्छे बैल भी चाहिये, तो सर्वाङ्गी नस्लोंके साँड़ तथा स्थानीय नस्लकी गायें सबसे ज्यादा उपयोगी होंगी।

अपनी आवश्यकता तथा प्रान्तकी जलवायु और नस्लका ख्याल करके उत्कृष्ट-जातीय गुणवाले देशी साँड़को दूर-देशसे भी मँगाकर नस्ल सुधारी जा सकती है। स्थानीय पशु बढ़िया हों तो उनमेंसे ही श्रेष्ठ लक्षणोंवाले, ज्ञात-वंशज, और यदि सम्भव हो तो ज्ञात-शक्तिवाले साँड़को छाँटकर उससे गो-वंशको सुधारना चाहिये। हर हालतमें साँड़को गायसे बलवान्, ऊँचे आकारका और भारी होना चाहिये। आगेके लिये गो-जन्म-पत्र जरूर बना लेना चाहिये।

श्रेष्ठ साँड़के लक्षण—

(१) **ज्ञात-वंशज**—साँड़ दुधार गायों तथा उत्तम साँड़ोंके कुलका हो। जिस साँड़की माता, दादी, नानी भी दुधार गायें रही हों और जिसके पिता, दादा एवं नाना सद्गुणी साँड़ सिद्ध हो चुके हों, वही साँड़ सर्वश्रेष्ठ होता है। कम-से-कम साँड़के माता-पिताको तो सद्गुणी होना ही चाहिये।

ऐसे बढ़िया साँड़से गाभिन हुई गाय अधिक दूध देगी और उसकी बछिया दुधार गाय एवं बछड़ा साँड़ बनेगा।

जहाँतक सम्भव हो, साँड़के माता-पिताके गुण, दोष, जाति और शक्तिका पता लगाकर शालाके जन्मपत्रमें उनके पूरे इतिहासको लिख ले। इससे आगामी नस्लको सुधारने तथा किसी विशेष शक्तिको बढ़ानेमें सहायता मिलेगी।

(२) **शुद्ध नस्ल**—साँड़ अपनी जातिके शुद्ध गुण एवं कुलवाला होना चाहिये। विभिन्न जातिके मिलानसे पैदा संकर नस्लवाले पशुके शरीरमें नाना प्रकारके गुणोंवाले क्रोमोसोम्स (Chromosomes) का समावेश हो जाता है। गर्भाधानके समय उसमें जो गुण प्रभावशाली होंगे, वे ही उसकी संततिमें आ जायँगे। किंतु असली नस्लवाले साँड़में अधिकतर जाति-विशेषके ही गुण जाग्रत् और प्रभावशाली रहेंगे। अतः अधिकांशमें वह उन्हीं गुणोंका संचार अपनी संततिमें करेगा। इसलिये वह उत्तम और उपयोगी है।

(३) **आयु**—साँड़की उम्र ३ वर्षसे कम और ९-१० वर्षसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। पूर्ण युवा साँड़के चार पक्के दाँत होते हैं। कच्ची उमरवाले साँड़को सावधानीसे पालना और गायके सम्पर्कसे बचाना चाहिये, अन्यथा बढ़िया होनेवाला साँड़ भी क्षीण हो जायगा।

(४) **अवधि**—४ वर्षसे अधिक समयतक एक साँड़का उसी गोशालामें रहना अच्छा नहीं है। चार वर्षके भीतर इस साँड़से उत्पन्न बछिया तीन वर्षकी होकर गर्भ धारण करने योग्य हो जायगी। अतः इसी साँड़के संयोगसे उसे बचाना चाहिये। साधारण गो-पालकके लिये हर-पीढ़ीमें नये खूनका संचार ही वाञ्छनीय रहेगा।

(५) **संयोग**—एक साँड़से सप्ताहमें एक बार एक

गायसे अधिक गायें हरी नहीं करानी चाहिये, नहीं तो वह कमजोर हो जायगा। रोगी गायके सम्पर्कसे भी उसे बचाना चाहिये। शालाकी हर ४०-५० गायोंके पीछे एक साँड़का होना जरूरी है।

(६) परिचर्या—गायसे संयोग करानेके बाद साँड़को पौष्टिक चारा, दाना तथा गुड़ जरूर खिलाना चाहिये। ऋतुके अनुसार साँड़को स्नान कराना और उसपर ब्रुश फेरना चाहिये। गर्मीके मौसममें उसे रोज ही नदी, तालाब या शालामें नहलाना चाहिये। जाड़ोंमें कभी-कभी धूपमें नहलाकर पोंछ देना ठीक रहता है। उसका सारा शरीर खूब सुखा देना चाहिये। साँड़को सर्वदा स्वच्छ एवं नीरोग रखना चाहिये; उसके शरीरपर किलनी, बग्घी आदि जन्तु कतई न रहने पायें।

(७) व्यवहार—साँड़को छेड़ना तथा चिढ़ाना नहीं चाहिये, वह स्वतन्त्रजीवी है और स्वच्छन्दताको पसंद करता है। अपनी गोशालासे बाहर जानेपर वह स्वतः ही लौट आयेगा।

(८) परिश्रम—साँड़को हमेशा बंद रखकर ज्यादा भारी, मोटा और आलसी नहीं बनाना चाहिये। उसके लिये भी घूमना-फिरना और स्वतन्त्र होकर घास चरना बहुत जरूरी है।

शरीरके अवयव

रंग—जातिके अनुसार काला, लाल, चितकबरा या सफेद और सुन्दर हो।

चर्म—पतला, चिकना और रेशम-से नरम बालों-वाला हो।

कद—ऊँचा, लंबा, सुगठित और भारी हो।

सिर—लंबा, माथा चौड़ा और गर्दन भारी हो।

झूल—मोटी एवं भारी झालरदार, सींग छोटे और गुद्दल तथा कान बड़े हों।

दृष्टि—तेज, आँखें लाल रंगकी और दाँत तीखे तथा मजबूत हों।

ठाटी—ऊँची, भारी एवं चलते समय हिलनेवाली तथा सीना चौड़ा हो।

कंधे—ऊँचे, पुट्ठे चौड़े और पीठ लंबी हो।

पूँछ—सीधी, मोटी, घनी-चौंरीदार और जमीनको छूती हुई लंबी हो।

पैर—गठीले तथा मजबूत, नाभि लंबी और मुताम लटकता हुआ किंतु ढीला न हो।

रँभाना—मेघके समान गम्भीर और स्वभाव शान्त किंतु स्वतन्त्र हो। वह छोटे बछड़े-बछियोंसे चिढ़नेवाला न हो।

शेष अवयव उत्तम गायके समान हों।

साँड़ोंकी जाति-व्याख्या

१-श्रेष्ठ—वह है, जिसके सींगोंके आगेका भाग और नेत्र तो लाल रंगके हों, किंतु शेष शरीर सफेद रंगका, खुर चिकने तथा कोमल, मस्तक चौड़ा तथा गर्दन ऊँची हो। रोकनेपर वह दाहिनी ओर घूम जानेवाला हो।

२-विचित्र-सिद्धिदायक—जो ध्वजा, पताका एवं शक्तिके चिह्नोंवाला हो।

३-भाग्यवर्धक—जिसमें कमलकी आकृतिके चिह्न या धब्बे हों।

४-नील-वृषभ—जिसकी टाँगें, मुँह और पूँछ सफेद रंगके, किंतु शेष शरीर लाखके रंगका हो और आगेका धड़ उभरा हुआ तथा पूँछ मोटी एवं जमीनको छूती हुई हो। ऐसे लक्षणोंवाले साँड़को छोड़नेसे पितरोंको विशेष तृप्ति होती है, ऐसा माना जाता है।

५-नन्दी-मुख—जिसका कानोंतक मुँह सफेद रंगका हो और शेष शरीर लाल रंगका हो।

६-समुद्रक—जिसकी केवल पीठ या पेट ही सफेद रंगका हो और शेष शरीर काले, पीले या लाल रंगका हो।

७-धन्य—जो चितकबरा हो।

८-करट—जिसके दो या सभी पैर सफेद हों और शेष शरीर पीले रंगका हो।

९-निकृष्ट—वह है, जिसके तालु, ओठ एवं मुँह काले रंगके हों, सींग और खुर खुरदरे हों। कद नाटा और ठिगना हो, रंग गीधका-सा भूरा या कौएका-सा काला हो। आँख कानी, भेंड़ी या चंचल हो। जो रोगी, निर्बल या बूढ़ा हो, जिसके पैर बराबर न पड़ते हों, जो अज्ञात जाति और वंशका हो तथा संरक्षक न हो, ऐसे दोषयुक्त साँड़को गोशालाके पास भी नहीं आने देना चाहिये।

गायोंके खुराककी विवेचना

खुराक—

१-चारे-दाने भाँति-भाँतिके होने चाहिये। एक ही प्रकारका चारा-दाना खाते-खाते गाय ऊब जायगी और उसकी रुचि कम हो जायगी। गायके लिये सानी मौसमके अनुकूल बदल-बदलकर करना चाहिये इससे वह खुश और तंदुरुस्त रहेगी।

२-चारे-दानेके मेल करनेमें पशुकी आदतका भी ध्यान रखना चाहिये। हर एक पशु एक ही प्रकारकी सानी नहीं खा पाते। कोई-कोई पशु-जाति किसी विशेष चीजको पसंद करती है।

३-यदि उन्हें नयी तरहकी खुराक खिलानी हो, तो धीरे-धीरे और थोड़ी-थोड़ी मात्रामें खिलाकर आदत डालनी चाहिये। साइलेज-कूपके चारे पहले-पहल जानवर नहीं खाते, परंतु एक बार आदत पड़नेपर वे उसे रुचिसे खाने लगते हैं।

४-चारे-दानेकी प्रत्येक खुराकमें नमक और पानीका मिलाना जरूरी है, क्योंकि इस प्रकारकी मिलायी हुई सानी सरलतासे पच जाती है। किंतु कई स्थानोंमें सूखे दाने और खलीके देनेकी भी प्रथा है।

५-जाड़ोंमें दाना देरमें फूलता है, इसलिये छः-सात घंटेतक उसे भिगोना चाहिये। रातमें नमक और खली मिलाकर दाना भिगो दे और इससे सुबहकी सानी करे। सुबहको भिगोया हुआ दाना-खली शामकी सानीके काममें लाये। ठंडके दिनोंमें गायको बिनौला उबालकर और उसमें गुड़ मिलाकर खिलाये। इससे दूधमें मक्खन तथा मिठासका अंश बढ़ जायगा।

६-गर्मीके दिनोंमें अधिक देरतक भिगोनेसे दाने और खलीमें खटास आ जाती है, इसलिये सानी करनेके केवल तीन-चार घंटे पहले ही इन्हें भिगोये।

इस मौसममें गायको बिनौला खिलाना ठीक नहीं है। किंतु यदि थोड़ा-सा बिनौला ठंडे पानीमें चार-पाँच घंटोंतक भिगोकर, जौके दलियेके साथ दिया जाय तो हानि नहीं करेगा।

७-चारेमें भीगा हुआ दाना-खली-नमक मिलाकर सानीको खूब पलट देना चाहिये, ताकि सभी चीजें भलीभाँति मिल जायँ।

८-चारा अच्छी तरह बारीक कटा होना चाहिये। महीन कटा हुआ चारा जल्दी पचता है और सानी करनेपर वह अच्छी तरह मिल जाता है। मोटा-कटा हुआ चारा इधर-उधर बिखर कर बेकार और खराब हो जाता है।

९-सूखे चारेके बजाय हरा चारा रसीला होनेके कारण जल्दी पचता है और जायकेदार भी होता है। हरे चारेमें विटामिन 'ए' खूब होता है, किंतु सूखे चारेमें यह नहीं होता। इस विटामिनकी कमीका पशुपर बहुत बुरा असर पड़ता है। इससे उसकी रोग-निवारक-शक्ति, आगामी नस्ल और आँखें कमजोर हो जाती हैं। लूसर्न, बरसीम और दूब आदिकी हरी घासोंमें यह विटामिन खूब होता है।

१०-चारेको ठीक समयपर जब कि पौधोंमें दूध-भरे बीज भर आयें, किंतु पककर सूखनेके पहले ही काट ले और अच्छी तरहसे सुखाकर साफ-सुथरे और ऊँचे स्थानपर रखे। जरा-सा भी गीला रहने या सीलन-भरे स्थानोंमें रखनेसे चारा सड़ जायगा। ध्यान रहे कि चारा कहीं बहुत ज्यादा न सूख जाय, क्योंकि ऐसे चारेमें अधिकांश विटामिन बहुत कम रह जाते हैं और वह साररहित हो जाता है।

११-हरे चारेको संचित कर रखनेकी उपयोगी विधि साइलेज-कूपकी है। इस विधिसे संचित चारा हरा बना रहनेके कारण पोषक तत्त्वोंवाला होता है। इसको खिलानेके बाद दाना देनेकी खास जरूरत नहीं पड़ती।

१२-बीजरहित सूखे चारेमें पोषक तत्त्व तथा विटामिन 'ए' नहीं होते, इसलिये केवल भूसेपर ही रखी गयी गायका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। किंतु आम तौरपर खुराकमें चारेका थोड़ा-सा सूखा अंश भी रहना चाहिये।

१३-खुराककी चीजें अच्छी और बढ़िया किस्मकी हों। पशुओंको सड़ा-गला दाना-चारा और खराब रोटी कभी न खिलाये। बढ़िया किस्मका दाना-चारा लाभदायी होनेके कारण ज्यादा महँगा न पड़ेगा।

१४-पशुको बहुत ज्यादा दाना खिलाना भी ठीक

नहीं, क्योंकि इससे उसकी पाचनशक्तिपर जरूरतसे ज्यादा भार पड़ जाता है, इस कारण पशुका गोबर और मूत्र दूषित हो जाता है।

१५-आवश्यकतासे अधिक दाना तथा खली खिलानेसे गायकी केवल चर्बी ही विशेष बढ़ जायगी, इस कारण वह दूध देना कम कर देगी। मोटी और मांसल गाय जल्दी गाभिन भी नहीं हो पाती, क्योंकि उसके शरीरमें हारमोन्स अच्छी तरह विकसित नहीं होते, इसी कारण ऋतुके लक्षण प्रकट होनेमें देर लगती है। ऐसी मोटी गायको मीठी—जैसे गुड़, शीरी और कार्बोहाइड्रेटवाली चीजें—नहीं देनी चाहिये। अधिक मात्रामें मीठी चीजोंके खानेसे प्रजनन-शक्तिपर बुरा असर पड़ता है।

१६-कम खुराक पानेके कारण दुबले तथा कमजोर हुए जानवरकी भी दूध देने, प्रजनन तथा काम करनेकी शक्ति कम हो जायगी। कमजोर गाय देरमें गाभिन होगी और उसका बच्चा भी पूर्ण बलवान् न होगा। ऐसे पशुको पौष्टिक चारा-दाना खिलाकर उसकी हालत सुधारनी चाहिये।

१७-गायको ऐसा चारा-दाना देना चाहिये, जिसे वह सहजहीमें लौटा कर जुगाली कर सके। अच्छी तरह जुगाली न की जा सकनेवाली खुराक पचने नहीं पाती।

१८-गायकी खुराक 'चारा-दाना, खली-नमक' की कीमत देश-काल तथा स्थितिके अनुसार कम-ज्यादा होती रहती है, किंतु साधारणतया खुराककी कीमत गायके दूधकी कीमतके $\frac{3}{4}$ या $\frac{3}{3}$ के अनुपातमें होनी चाहिये।

१९-पशुको चरनेके लिये अवश्य भेजना चाहिये। जाड़ा, गर्मी तथा बरसात आदि सभी ऋतुओंमें अपनी रुचिके अनुसार हरियाली चरते हुए पशुका शरीर-संचालन भलीभाँति हो जाता है और इस प्रकार वह स्वस्थ एवं प्रसन्न रहता है।

२०-दुहनेके पहले गायको भर-पेट खुराक जरूर ही खिला देनी चाहिये। खाली पेट दूध दुहनेसे गायके अवयवोंपर बहुत जोर पड़ता है।

२१-गाय एक स्वच्छताप्रिय जीव है। इसकी नाँद तथा खुराककी चीजें दोनों ही साफ होनी चाहिये। मिट्टी, गोबर या अन्य अशुद्धियाँ मिल जायँ तो वह ऐसी सानी नहीं खायगी।

२२-कुत्ते, सूअर, बकरी और मुर्गी आदि जानवरोंको चारा-दानावाले स्थानके निकट नहीं जाने देना चाहिये, क्योंकि वे मुँह डालकर उसे गंदा कर देंगे और बीमारी फैलायेंगे।

दूध देनेवाले पशुओंको खिलाने-योग्य चारे—

१-ज्वारकी चरी—यह चारोंमें मुख्य है, क्योंकि इसे हरी, सूखी या साइलेज-कूपमें भर कर सभी तरहसे खिलाते हैं। किंतु हरी चरी ही उत्तम चारा है।

२-सरसोंकी चरी—हरी नरम और सिंगरीदार सरसों दूसरे चारोंके साथ मिलाकर खिलानी चाहिये। यह दूध बढ़ानेवाली और गर्म-तासीरकी होती है।

३-जौ तथा जई (सेऊँ)-की चरी—ये पौधे दूधर-दानोंके भर आनेपर हरे-हरे खिलाये जाते हैं। ये दुग्ध-वर्धक हैं। जौका तो सूखा भूसा भी खिलाया जा सकता है, किंतु जई (सेऊँ)-का भूसा बेकार होता है।

४-मटरका पौधा—नर्म फलियोंके भर आनेपर इसे खिलाये। इसमें सड़नेवाले कार्बोहाइड्रेट बहुत होते हैं, अतएव इसे जौ आदिके चारे या भूसेके साथमें मिलाकर ही खिलाना चाहिये।

५-हरे मक्केंकी करबी—पानीका प्रबन्ध करके मक्काको चैत्रमें बो दे और ज्येष्ठसे भाद्रपदतक ग्वार और लोबियाके पौधोंके साथ मिलाकर इसकी हरी करबी खिलाये। गर्मीके दिनोंमें—साइलेजके अतिरिक्त यही एक (करबीकी) हरियाली मिल सकती है।

६-हरी ग्वार और लोबियाकी करबी—चैतसे भादोंतक बोये और मक्केकी चरीके साथ खिलाये।

७-उर्द तथा मूँगका हरा पौधा—इसे भादोंसे कार्तिकतक बोये और नरम फली-सहित अन्य चारोंके साथ खिलाये। उपर्युक्त दालके पौधोंके चारोंमें प्रोटीनके तत्त्व खूब होते हैं।

८-गेहूँका हरा पौधा—यह दूधर-दानों-सहित खिलाया जाय, तो बहुत लाभकारी होगा। गेहूँ निकालकर इन पौधोंका सूखा भूसा ही प्रायः खिलाया जाता है, किंतु यह भूसा पोषक नहीं होता।

९-चना और मसूरका पौधा—चनेके पौधेमें भी क्षार बहुत अधिक होता है, इसलिये इसे भी दूसरे चारोंके साथ मिलाकर ही खिलाये।

१०-लूसर्न और बरसीम—ये दोनों तरहकी घासें बहुत पोषक हैं। यदि काफी तादादमें दी जायँ तो पशुको

दाना देनेकी जरूरत नहीं पड़ती।

११-दूब, हलीम और झरुआ आदि तरह-तरहकी घासें अच्छी होती हैं। इनमें दूब सर्वश्रेष्ठ है। झरुआ भी एक अच्छी और दानेदार घास है। इसे भरपेट देनेपर दानेकी जरूरत नहीं पड़ती।

१२-गाजर और मैंगोल्डकी कंद पोषक और दूध बढ़ानेवाली होती है।

१३-मोठका पौधा बहुत गर्म होता है, अतः इसे ऽ२ या ऽ२॥ से ज्यादा न दे और सदा दूसरे चारोंके साथ मिलाकर ही खिलाये। ये सभी चारे बैल और साँड़को भी खिलाये जाते हैं। आवश्यकता पड़नेपर बैलोंको तो बाजरेकी हरी चरी या गन्नेके अगौले भी खिलाये जा सकते हैं, परंतु गायोंको नहीं।

दूध देनेवाले पशुओंको खिलाने योग्य दाने—

१-गेहूँका दलिया और चोकर बहुत बढ़िया होता है।

२-चनेका दाना और चूनी मिली हुई भूसी।
३-अरहरकी चूनी-भूसी।
४-मूँगकी चूनी-भूसी।
५-मसूरकी चूनी-भूसी।

इन दानोंमें प्रोटीन-प्रधान तत्त्व बहुत होते हैं और भूसीमें फासफोरसका काफी अंश होता है, अतः इनका खिलाना अच्छा है।

६-जौका दलिया। यह भी बहुत अच्छी चीज है।

७-बिनौले उचित मात्रामें तथा ऋतुका ख्याल करके उबालकर या भिगोकर दे।

८-खली सरसों और लाही, तिल, मूँगफली, अलसी तथा बिनौले आदिकी खिलाये।

९-ग्वारका चना दलकर और उबालकर या भिगोकर दे। यह ज्यादा देनेपर कब्ज करता है।

१०-गुड़ और शीरा थोड़ा-सा खिलाये।

११-राँधी हुई चीजें जैसे—दालका पानी, चावलका माँड़, रोटी और थोड़ा-सा दलिया दिया जा सकता है।

ऊपर लिखी हुई चीजें साँड़ों तथा बैलोंको भी हितकारी है। उन्हें उर्दकी चूनी-भूसी भी खिलायी जा सकती है। ज्वारका दाना भी उनके लिये बलवर्धक खुराक है। साँड़को अंकुर आये हुए चनोंमें नमक मिलाकर खिलाना गुणकारी है।

दूध देनेवाले पशुओंको न खिलाने योग्य चारे—

१-मक्केकी सूखी चरी।
२-बाजरेकी हरी तथा सूखी चरी।
३-गन्नेकी पत्तियाँ (अगौले)।
४-चनेके पौधोंका भूसा।
५-ग्वारकी सूखी लकड़ीका भूसा।
६-चना और कँगनीकी सूखी पुराली।
७-धानका सूखा हुआ पुआल।
८-हरी या सूखी सनकी पत्ती, जो बहुत गर्म होती है। यह केवल दवाके काममें आती है।

९-ऐसी फसलें जो केवल मात्र शहरके गंदे नालोंके पानीसे सींचकर तैयार की गयी हों। ये नाइट्रोजनकी अधिकताके कारण ऊपरसे सुन्दर और पुष्ट दिखायी देती हैं, किंतु पौष्टिक तत्त्वरहित होती हैं और कभी-कभी रोगका कारण भी बन जाती हैं।

उपर्युक्त चीजें बैलोंको भी नहीं खिलानी चाहिये, किंतु उन्हें गन्नेके अगौले और बाजरेकी हरी चरी दी जा सकती है।

दूध देनेवाले पशुओंको न खिलाने-योग्य दाने—

१-उरदकी दाल तथा चूनी और भूसी खिलानेसे यद्यपि एक बार गायका दूध बढ़ जाता है, तथापि दुग्धवाहिनी नाड़ियोंपर विशेष दबाव पड़ जानेके कारण भविष्यमें उसका दूध कम हो जाता है।

२-चनेकी निरी भूसी, जिसमें चूनी या दालका काफी अंश न हो, नहीं खिलानी चाहिये। अधिक फासफोरसके कारण यह दूध और खूनको सुखा देती है।

३-मटरका दाना बहुत बादी तथा वायु बढ़ानेवाला होता है। अन्य दानोंके साथमें मिलाकर देनेसे यह हानि नहीं करता।

४-बाजरेका दाना गर्म और दूधको सुखा देनेवाला होता है।

५-ज्वारका दाना विशेष गर्म और दूधको सुखानेवाला होता है, किंतु यह बैलोंके लिये बलवर्धक है।

६-सूखी रोटी, सड़ी दाल, गंदी जूठन आदि वस्तुएँ भी कभी न खिलाये।

***

विज्ञानके अप्राकृतिक प्रयोग

वर्तमान साहित्यके पाठक इस बातसे अपरिचित नहीं होंगे कि यूरोपमें कई जगह ऐसे प्रयोग शुरू हुए हैं कि पुरुषके वीर्यको और स्त्रीके रजको उचित मात्रामें ट्यूबमें रक्खा जाय और कृत्रिम साधनोंसे उसे गर्भस्थ बालककी भाँति बढ़ाया जाय। अभी इन प्रयोगोंमें पूरी सफलता तो नहीं मिली है, परन्तु प्रयत्न चालू है। (अवश्य ही गत महायुद्धके कारण पाश्चात्य वैज्ञानिकोंके मस्तिष्क जन-ध्वंसक प्रयोगोंके अन्वेषणमें ही लग गये थे और इससे इस प्रकारके शोधोंके कार्यमें कुछ शिथिलता भी आ गयी थी।) उनका कहना है कि इससे स्त्रीको न तो गर्भ-धारणका लंबा कष्ट भोगना पड़ेगा और न प्रसवकी पीड़ा ही सहन करनी पड़ेगी। प्रसवका झंझट न रहनेसे प्रसूतिसम्बन्धी रोगोंकी तो कोई आशङ्का ही न रहेगी। रही स्त्री-पुरुषके स्वाभाविक विषय-सुखकी बात, सो कृत्रिम गर्भनिरोधी यन्त्रोंके उपयोगसे उसमें कोई आपत्ति नहीं आवेगी। बल्कि आगे चलकर तो विवाहका झंझट और उत्तरदायित्व भी दूर हो सकता है। ऐसे लोगोंका यह भी कथन है कि इस प्रकार जो सन्तान होगी, उनके पालन-पोषणका दायित्व सरकारपर रहेगा, इससे माता-पिताकी हैसियतसे सन्तानके लालन-पालनकी और पुत्र-पौत्रकी हैसियतसे माता-पिताके भरण-पोषण और सेवा-शुश्रूषाकी कोई जिम्मेवारी नहीं रहेगी। जीवन स्वतन्त्र और स्वेच्छाचालित बन जायगा। यह उन लोगोंके कथनका सार है, जो सारे दायित्वसे छूटकर विषयानन्दका उपभोग करना चाहते हैं!

पर दीर्घदृष्टिसे विचार करनेपर पता लगता है कि ये विचार सर्वथा भ्रामक और अदूरदर्शितापूर्ण हैं और इन विचारोंके अनुसार क्रिया होनेपर मनुष्य दायित्वज्ञानशून्य, सहानुभूतिरहित एक असहाय प्राणी बन जायगा और क्रमशः उसका मनुष्यत्व ही मर जायगा। स्त्रियोंका मातृत्व, माता-पिताका अपत्यस्नेह, पुत्र-पौत्रोंकी मातृ-पितृ-भक्ति और पति-पत्नीका हृदयगत प्रेम पारस्परिक सहृदयता, सेवा और सहानुभूति पैदा करके सभीको कठिन समयमें सहायता पहुँचाता है, जीवनमें सरसता पैदा करता है और कर्तव्य-बोधसे उनके मनुष्यत्वको मरने नहीं देता। पर जबतक घोर विषयानन्द ही जीवनका लक्ष्य है और उसकी पूर्तिके लिये विज्ञानकी सहायता प्राप्त है तबतक मनुष्यमें ऐसी पतनोन्मुखी और पतनके गहरे गर्त्तमें गिरानेवाली निरङ्कुश वासनाएँ जागती ही रहेंगी।

पशुओंमें कृत्रिम सन्तति-उत्पादन

मनुष्योंकी तरहसे पशुओंमें भी अप्राकृत प्रयोग शुरू हुए हैं। गाय-साँड़के संयोग बिना बछड़े उत्पन्न करनेकी पद्धति इसका नमूना है। इससे अवश्य ही बहुत-से साँड़ोंके पालनके बिना ही सन्तति-उत्पादनका कार्य हो जा सकता है और ऊपरसे देखनेमें एक बार लाभ भी दीख सकता है; परन्तु नैसर्गिक प्रक्रियाके स्थानपर इस कृत्रिम प्रक्रियाका प्रचलन होनेपर प्राकृत-नियमानुसार आगे चलकर इसका बड़ा बुरा परिणाम होगा। पशुओंकी स्वाभाविक संयोग-लालसा नष्ट हो जायगी और वे सन्तानोत्पादनके सर्वथा अनुपयुक्त हो जायँगे। इस बातपर अभी इन वैज्ञानिकोंका ध्यान नहीं गया है। आशा है कि वे आपात-लाभके साथ ही भविष्यकी इस भीषण बुराईपर भी ध्यान देंगे।

गौसे अलग बछड़ेका पालन

यहाँ पाश्चात्य ढंगकी कई गोशालाओं (डेयरी फार्मों) में गायोंसे अलग रखकर बछड़ोंके लालन-पालनकी व्यवस्था है और उसमें उन्हें काफी सफलता भी मिली है। इससे आर्थिक दृष्टिकोणसे वे गाय और बछड़ेकी आर्थिक उत्पादकताका ठीक-ठीक हिसाब रख सकते हैं और उपयोगिताकी दृष्टिसे उनके पालन-पोषणमें यथायोग्य न्यूनाधिकता भी कर सकते हैं। अनुपयोगी पशुओंको हटा भी सकते हैं; परन्तु विचारणीय प्रश्न तो यह है कि ऐसी गायके दूधमें नैसर्गिक मातृ-स्नेह, जो दूधको अमृत बना देता है, कहाँसे आवेगा? बछड़ेके बिना कृत्रिम साधनोंसे पिन्हाई हुई गाय दूधकी 'मशीन' अवश्य होगी, पर वह स्नेहमयी 'गो-माता' कदापि नहीं होगी। मशीनके कृत्रिम दूधसे माताके स्नेहमय दूधमें बड़ा अन्तर होता है। इसको वैज्ञानिक चाहे न माने, पर यह सत्य तो है ही।

बच्चे नियमित दूध तथा उचित आहारको पाकर पुष्ट हो जायँगे, पर बिना माके बच्चेकी तरहसे वे मातृ-स्नेहसे तो वञ्चित ही रहेंगे! पता नहीं—माताओंकी जिंदगीमें ही उनके दुधमुँहे बच्चोंको मातासे अलग रखनेमें कोई पाप भी है या नहीं? और इसका फल भी होगा या नहीं? (ह०)

गो-चिकित्सा

गो-चिकित्सा पुण्य है

आज भारत-जैसे निर्धन एवं पिछड़े हुए देशमें, जहाँ लाखों-करोड़ों मनुष्योंके स्वास्थ्यकी किसीको चिन्ता नहीं, मूक पशुओंकी चिकित्साके विषयमें सोचना कुछ व्यक्तियोंकी दृष्टिमें एक हास्यजनक बात होगी। किंतु विचार करके देखें तो बात ऐसी नहीं है। पशुओंके स्वास्थ्यपर ही मनुष्योंका स्वास्थ्य निर्भर करता है। कुछ लोग तो ऐसे हैं, जो पशुओंके स्वास्थ्यको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हैं; परंतु अधिकांश व्यक्ति ऐसे हैं, जो आकांक्षा रहनेपर भी पशुओंके बीमार होनेपर या किसी दूसरे समय उन्हें कौन-सी दवा अथवा पथ्य देना चाहिये, किन-किन कारणोंसे उनमें भाँति-भाँतिके रोग आते हैं और किस प्रकार वे पूर्ण स्वस्थ रह सकते हैं—यह नहीं जानते।

प्राचीन भारतमें तो पालकाप्य-जैसे महर्षि तथा ऋतुपर्ण, नल एवं नकुल-जैसे महाराज गो-चिकित्सक एवं पशु-चिकित्सक थे। अग्निपुराण और गरुडपुराण, बृहत्संहिता एवं सुश्रुतके चिकित्सा-ग्रन्थोंमें गो-चिकित्सापर बहुत कुछ लिखा गया है। परंतु आजकी स्थिति बड़ी विकट है। कुछ भोले धर्मभीरु भाइयोंकी तो यह धारणा हो गयी है कि देवी-तुल्य गोमाताके शरीरमें अस्त्र-प्रयोग करना सबसे बड़ा पाप है। वैसे चाहे वह सड़-गलकर तड़फती रहे और अपने इस भौतिक शरीरको छोड़ भी दे। दूसरे, यह भी एक भय है कि ओषधि करते हुए यदि दुर्भाग्यवश यथायोग्य ओषधि न दी जा सके और कुचिकित्साके कारण गायके प्राण चले जायँ तो चिकित्सकको गो-हत्याका महान् पाप लगेगा। तीसरे, गो-चिकित्साद्वारा अर्थ उपार्जन करना पाप है; पर बिना कुछ लिये चिकित्सा करनेको न तो समय है और न मन ही। इन्हीं भ्रान्त, शास्त्र-असम्मत एवं घातक धारणाओंके पीछे पड़कर कोई भी भला मनुष्य गो-चिकित्साके क्षेत्रमें प्रवेश नहीं करना चाहता, अतएव गो-चिकित्साका यत्किंचित् भार मूर्खोंके हाथमें भी पड़ा हुआ है।

उपर्युक्त विषयोंपर पूर्णरूपसे विचार करनेपर ज्ञात होता है कि गो-चिकित्साके विषयमें लोगोंमें फैली हुई यह धारणा न तो शास्त्रसम्मत है न नीतिसम्मत और न यह बुद्धिवादकी दृष्टिसे ही ठीक है। भला जरा सोचें तो सही—जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त ही नहीं, मृत्युके पश्चात् भी हमारी सब प्रकारसे सेवा करनेवाली माता गौके बीमार होनेपर या आहत होनेपर उसकी चिकित्सा करना पापकी श्रेणीमें गिना जायगा कि महान् पुण्यमें? हमारे विचारसे तो ऐसी गायोंकी चिकित्सा, सेवा एवं शुश्रूषा करनेसे पाप होना तो दूर रहा, कर्ताके जन्म-जन्मान्तरके अनेकों पाप नष्ट हो जाते हैं।

आपस्तम्ब और संवर्त आदि स्मृतियोंके वचनोंसे यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि उपकारकी दृष्टिसे गो-चिकित्सा करते समय यदि कुछ हानि भी हो जाय तो उसमें भली नीयतसे काम करनेवालेको कोई अपराध नहीं लगता—

यत्नेन गोचिकित्सार्थे मृतगर्भविमोचने।
यत्ने कृते विपत्तिश्चेत् प्रायश्चित्तं न विद्यते॥

(आपस्तम्ब० १। ३१-३२)

औषधं स्नेहमाहारं ददद् गोब्राह्मणेषु च।
दीयमाने विपत्तिः स्यात् पुण्यमेव न पातकम्॥

(संवर्त०, श्लोक १३८)

अर्थात् यत्नपूर्वक गो-चिकित्सा करने अथवा गर्भसे मरा हुआ बच्चा निकालनेमें यदि गायपर कोई विपत्ति भी आ जाय तो प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता नहीं है। यदि गौ और ब्राह्मणको उनके लाभके लिये कोई औषध, तैल, आहार आदि दिया जाय और उससे उनपर कोई विपत्ति आ जाय तो भी पाप नहीं होता, वरं पुण्य ही होता है।

शास्त्रोंके वचनोंसे ज्ञात होता है कि पाप और पुण्य मनुष्यकी भावनापर निर्भर है। हम गुस्सेमें आकर किसीके शरीरपर साधारण-सी चोट लगा देते हैं तो पाप हो जाता है; किंतु डॉक्टर लोग बड़े-बड़े ऑपरेशन कर डालते हैं और कइयोंके अङ्ग भी काट डालते हैं, फिर भी वे पुण्यात्मा समझे जाते हैं, इसका कारण यही है कि हमारा कृत्य हिंसा, द्वेष एवं परपीडनकी भावनासे भरा होता है और डॉक्टरका काम देखनेमें अत्यन्त दोषपूर्ण होते हुए भी प्रेम, उपकार एवं हितकी पवित्र भावनासे प्रेरित है। वस्तुतः क्रियाका महत्त्व भावनाके सामने बिलकुल गौण है। बस, गो-चिकित्साके विषयमें हमें इस सिद्धान्तको सामने रखकर बिना किसी प्रकारके संकोचके कार्य करना चाहिये। जिस प्रकार मनुष्यकी डॉक्टरी चिकित्सामें काटना, चीरना आदि आवश्यक होनेके कारण किसीको उसमें घृणा नहीं है और सभी तरहके लोग निःसंकोच भावसे यह कार्य करते हैं, उसी प्रकार गो-चिकित्साके विषयमें सभी तरहके सुयोग्य पुरुषोंको पूरे उत्साहके साथ भाग लेना चाहिये। ऐसा करनेसे ही हम अपने कर्तव्यका पालन कर सकेंगे।

गायोंके रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

पशुओंको भी रोग उतना ही कष्ट देते हैं, जितना कि मनुष्योंको। अन्तर इतना ही है कि हम मनुष्य विवेक-साधन तथा उपायोंद्वारा किसी सीमातक रोग दूर करके कष्टका निवारण कर लेते हैं; किंतु बेचारे मूक, असहाय, विवश तथा केवल पूँछ हिलानेतकका उपाय कर सकनेवाले पशु रोगग्रसित होकर कष्टोंको सहते रहते हैं। पर मनुष्य-जातिकी शोभा इसमें नहीं है। जिसने अपनी बुद्धि तथा सामर्थ्यका उपयोग अपने ही लिये किया, उसने क्या किया? मनुष्यका यह कर्तव्य है कि परिवारके प्राणीके समान एक ही घरमें रहनेवाले अपने पशुओंके भी दुःखको दूर करनेके लिये कुछ उठा न रखे। सोचा जाय तो ऐसा करनेमें वह पशुओंके ऊपर कोई एहसान नहीं करेगा, यह उसका धर्म है; क्योंकि मनुष्यने ही तो उन्हें प्रकृतिकी गोदीसे छीनकर अपने कामके लिये अपने घरमें बाँध रखा है। जंगली पशुओंकी दवा करने कौन जाता है? प्रकृति माता स्वयं उनकी देख-भाल करती है। अतः यदि मनुष्य प्रकृति माताके इन पशुओंके दुःख-सुखकी परवा नहीं करता तो यह उसकी कृतघ्नता है। और वह प्रकृतिदेवीका कोप-भाजन बनकर दण्डका भागी होगा।

हमारे शास्त्रोंमें कहा हुआ है कि जबतक रोगिणी, भयभीत, (चकित), बाघ अथवा चोर आदिसे सतायी हुई, ऊँचे स्थानसे गिरी हुई, दलदलमें फँसी हुई, सर्दी-गर्मीसे पीडित तथा अन्य किसी प्रकारसे दुःखित गौका उद्धार न कर ले तबतक आर्यसंतान कोई दूसरा कार्य न करे यथा—

आतुरां मार्गत्रस्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्भयैः।
पतितां पङ्कलग्नां वा सर्वोपायैर्विमोचयेत्॥
ऊष्मे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्।
न कुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वा तु शक्तितः॥

तात्पर्य यह कि जिस प्रकार अपने किसी घरवालेको खाँसी-बुखार हो जानेपर हम वैद्यके पास दौड़ने लगते हैं, उसी प्रकार अपने पालित पशुओंके रोगोंको दूर करनेके लिये भी हमें सचेष्ट होना चाहिये।

पशुओंकी रोगावस्थामें पशुशालाका प्रबन्ध

किसी पशुके रोग-ग्रस्त हो जानेपर उसे पशुशालासे हटाकर किसी अलग स्थानमें रखना चाहिये। इस प्रकार दूसरे नीरोग पशुओंकी रक्षा होगी। यदि छूतकी बीमारी न हो, तो भी रोगी पशुको अलग हटा देना ही ठीक है; क्योंकि प्रेम, द्वेष तथा सहानुभूतिका भाव पशुओंमें भी होता है। जब अन्य पशु अपने किसी साथीको दुखी या उदास देखेंगे तो वे भी उदास होकर खाना-पीना छोड़ सकते हैं। रोगी पशुका दाना-पानी दूसरे पशुओंके दाना-पानीमें न मिलने पाये।

रोगी पशुकी देख-भाल

रोगी पशुकी देख-भाल बड़ी सावधानीसे करनी चाहिये। उसको ऐसे स्थानपर रखना चाहिये, जहाँ हवा और प्रकाश अच्छी तरह आये-जाये; किंतु पशुके ऊपर न हवाका झोंका सीधा लगे, न तो धूप लगे। मक्खी-मच्छरोंसे बचानेके लिये गूगल, गन्धककी धूप या साधारण धुआँ कर देना चाहिये। पशुको दवा आदि पिलाते समय उसके साथ बहुत जबर्दस्ती करके उसे अधिक कष्ट न दिया जाय। यदि पशु एक दिनसे अधिक एक करवट पड़ा रहे तो उसे करवट बदलानेकी चेष्टा करनी चाहिये। रोगकी पहचान या निदान जल्दबाजीमें नहीं, वरं ठीकसे किसी चतुर व्यक्ति या चिकित्सकसे कराना चाहिये। अच्छे हो जानेपर उसे अन्य पशुओंके साथ मिलानेमें बहुत जल्दी करना ठीक नहीं। कोई तेज या जहरीली दवा लगानी हो तो ध्यान रखना चाहिये कि इधर-उधर न लग जाय। मालिकको ऐसे पशु केवल नौकरोंके भरोसेपर ही न छोड़कर स्वयं भी देखने चाहिये।

रोग होनेके सामान्य कारण

१-चारा-दाना आवश्यकतासे कम मिलना, २-खुराकमें आवश्यक पौष्टिक तत्त्वोंका मेल न होना, ३-सड़ा-गला दाना-चारा खाना तथा गंदा पानी पीना, ४-गंदे स्थान, अधिक सर्दी-गर्मी और वर्षासे बचनेका प्रबन्ध न होना तथा ५-छूतकी बीमारियोंसे स्वस्थ पशुओंको बचानेके विषयमें गोपालककी अनभिज्ञता।

रोगी पशुके लक्षण

१-दूध कम देना या न देना, २-उदास रहना, ३-झुंडसे अलग रहनेकी इच्छा, ४-चारे-दानेका त्याग, ५-जुगाली न करना, ६-गोबर न करना या पतला करना ७-बार-बार उठना-बैठना, ८-आँखोंका लाल हो जाना, ९-जल्दी-जल्दी साँस लेना, १०-मुख सूखना और ११-मुख तथा नाकसे पानी गिरना।

स्वस्थ गाय, बैल और भैंसका तापमान प्रायः १०१° से १०४° तक होता है, नाड़ीकी गति प्रतिमिनट ४५ से ५० बारतक है और साँस प्रतिमिनटमें १०-१२ बार आती है। इससे विपरीत हो तो पशुको रोगी समझना चाहिये।

दवाकी मात्रा

रोगी पशुओंके लिये आगे जो दवाओंकी मात्रा लिखी गयी है, वह पूरे प्रौढ पशुके लिये है, जिसका वजन १० मनके लगभग हो। अवस्था तथा वजनके अनुसार इस मात्रामें अन्तर पड़ेगा।

जन्मसे १ मासतक	१/१६	मात्रा
२ माससे ४ मासतक	१/८	"
४ " ६ "	१/४	"
६ " १२ "	१/३ या १/२	"
१ सालसे २ सालतक	१/२ या ३/४	"
२ सालसे ऊपर	पूरी मात्रा	

एक रोगकी कई-कई दवाइयाँ आगे दी गयी हैं, उनमेंसे कोई एक करनी चाहिये। एक लाभ न करे तो दूसरीका प्रयोग करना चाहिये।

छोटे बच्चोंके रोग और उनकी चिकित्सा

मनुष्यके बच्चोंकी भाँति गाय-भैंसके बच्चे भी मिट्टी चाटनेमें बड़े हातिम होते हैं। कभी-कभी वे इतनी मिट्टी चाट जाते हैं कि वह उनके पेटमें सड़ जाती है और कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े पड़ते ही बच्चा निर्बल होकर प्राय: मर जाता है। पहली रोक तो यह है कि बच्चोंके मुँहमें मुसका (जाली) चढ़ा दें, जिससे वे मिट्टी न चाट सकें और यदि कीड़े पड़ गये हों तो आधी छटाँक कबीला पीसकर आध पाव दहीमें मिलाकर देनेसे लाभ होता है।

कभी-कभी बच्चोंके पेटमें दूध जम जाता है, जिससे पाचनशक्ति मारी जाती है। इस रोगमें मट्ठा एक पाव, सरसोंका तेल आध पाव तथा नमक आधी छटाँक मिलाकर बच्चेको पिलाना चाहिये। इसमें एक छटाँक अमकलीको पानीमें भिगोकर और आध पाव सरसोंके तेलमें मिलाकर देना भी लाभकारी है।

यदि सड़ा-गला दाना-चारा खा लेनेसे अथवा गर्म और गंदा पानी पी लेनेसे बच्चेको पेचिश हो गयी हो और गोबरके साथ खून आता हो, तो आध पाव लिसोढ़ाके पत्तोंको पानीमें पीस-छानकर पिलाना चाहिये अथवा आधी छटाँक ईसबगोल एक छटाँक आँवलेके पानीमें देनेसे बहुत लाभ होता है।

जब बच्चेको खाँसी हो जाय तो केलेके सूखे पत्तोंकी राख बना ले और एक पैसेसे दो पैसे भरतक इस राखको आधी छटाँक घीमें मिलाकर एक पाव कच्चे दूधके साथ बच्चेको पिलाना चाहिये।

मूत्रके साथ खून आनेपर कलमी शोरा चौथाई छटाँकसे आधी छटाँकतक एक पाव कच्चे दूध और इतने ही पानीके साथ पिला देना चाहिये।

पेटमें दर्द हो तो चौथाईसे आधी छटाँकतक पीनेका तमाकू-पानीमें घोल-छानकर पिलाना ठीक है।

खुजलीकी भयंकर बीमारी भी बच्चोंको प्राय: हो जाती है। इसके लिये निम्नलिखित पाँच प्रकारकी दवाइयाँ हैं—

१-छटाँकभर लहसुनको आध पाव चने या जौके आटेमें मिलाकर पाँच दिनतक खिलाये।

२-सूखे नीमके पत्तोंका चूरा नमकमें डालकर चने या जौके आटेके साथ मिलाकर देना चाहिये।

३-मसूरकी दाल तथा सुपारी दोनोंको जलाकर इनकी राखको नीमके तेलमें डालकर शरीरमें लेप करे।

४-पीली सरसोंको कपड़े धोनेवाले साबुनमें मिलाकर शरीरमें लेप कर दे और ४-६ घंटे-पीछे फिनाइलके पानीसे नहला देना चाहिये।

५-एक पाव कड़ुवे तेलमें एक छटाँक गन्धक मिलाकर रख ले और शरीरपर लेप करता रहे।

यदि बच्चेके मसूढ़े फूल गये हों और उनमें घाव हो गये हों तो उन्हें माँसे अलग करके नीचे लिखी दवा करनी चाहिये—

एक पाव घी और एक छटाँक एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये। घी न मिल सके तो कोई दूसरी जुलाबकी दवा दे देनी चाहिये। बच्चेके मुँहको फिटकिरीके पानीसे भलीभाँति दिनमें चार बार धोना चाहिये।

रोग साधारणत: तीन प्रकारके होते हैं—(१) छूतवाले, (२) बिना छूतवाले साधारण और (३) शरीरके ऊपरके साधारण रोग।

छूतके रोग

छूतवाले रोग बड़े भयंकर और बड़ी जल्दी फैलनेवाले होते हैं। इनसे अपने पशुओंकी सदा रक्षा करते रहना चाहिये। इन रोगोंसे पशुओंको बचानेके लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहिये।

१-जिस इलाकेमें छूतकी बीमारी हो गयी हो वहाँ अपने पशु न जाने दे, न वहाँके पशु अपने गाँवमें आने दे।

२-अपने पशुओंकी देख-भाल ठीकसे करे तथा उन्हें सड़ा-गला चारा-दाना न खिलाये।

३-जहाँ सब पशु पानी पीते हों उस तालाब या नदीमें पानी न पिलाकर अपने पशुओंको कुएँसे पानी खींचकर पिलाये।

४-छूतकी बीमारीसे मरे हुए पशुको गाड़ देना चाहिये।

५-पशु-डॉक्टरसे अपने पशुओंको टीका लगवा ले।

१-माता (Rinderpest)

इसके कई नाम हैं, पर इसके मुख्य लक्षण हैं—आँखोंसे पानी और मुँहसे लार गिरना, शरीर काँपना, कमरका टेढ़ी हो जाना, मुँहमें छाले पड़ना और अत्यन्त बदबूदार पतला गोबर होना तथा उसमें कुछ खून आना।

इसकी सर्वश्रेष्ठ दवा टीका लगवाना है। अच्छे जानवरोंको 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' (Goat virus or serum simultaneous method) से रिंडरपेस्टका टीका लगवा देनेपर फिर यह बीमारी नहीं आती। रोग हो गया हो तो उसकी दवाइयाँ ये हैं—

१-रातको मिट्टीके बर्तनमें एक पाव आँवला भिगोकर सबेरे छान ले, फिर उस पानीमें एक पाव दही, एक छटाँक ईसबगोल और आध पाव शक्कर डालकर दिनमें दो बार खिलाये। आँवला न मिले तो धनियाका पानी काममें लाये।

२-बाँसी घासके बीज १ सेर बारीक पिसवाकर रख ले और आधा पाव सबेरे तथा आधा पाव शामको दही या मट्ठाके साथ देनेसे बड़ा लाभ होता है।

२-जहरी बुखार अथवा गड़ी वा सूत (Anthrax)

यह रोग रक्तके विकारसे होता है। पशुको बेचैनी होती है, आँखें बाहर निकल-सी पड़ती हैं, ज्वर बहुत हो जाता है और गोबर काले रक्तसे सना हुआ होता है। रोग होनेपर पशुचिकित्सकको शीघ्र बुलाना चाहिये और तबतक नीचे लिखी दवाइयोंमेंसे कोई पिलानी चाहिये—

१-तारपीनका तेल आधी छटाँक।

२-फिनाइल आधी छटाँक।

३-अलसीका तेल आधी छटाँक।

४-गरम पानी आध सेर।

३-गलघोंटू (Haemorrhagic Septicaemia)

यह रोग क्या है मानो मृत्युकी सूचना है। इससे गलेमें सूजन हो जाती है और पशुका गला घुटने लगता है। प्रायः यह आश्विनके महीनेमें होता है। यह रोग रक्त-दोषसे होता है। नाक-मुँहसे लार टपकती है। मुँहमें दुर्गन्ध और जीभपर घाव हो जाता है। गोबर-मूत्र बंद हो जाता है। इसकी दो-तीन दवाइयाँ हैं, सम्भव है लाभ कर जायँ।

१-दो सेर घी, १ सेर एप्सम साल्ट, १ पाव काली मिर्च और १ पाव काला जीरा मिलाकर पिला दे।

२-जमालगोटेका तेल ३० बूँद, मीठा तेल ५ छटाँक और अलसीका तेल ५ छटाँक पिलाये तथा फिटकिरीके पानीसे मुँह धोये।

३-गन्धकका चूर्ण २ तोले तथा सोंठका चूर्ण १ तोला आध सेर भातके या तीसीके माँड़* के साथ मिलाकर खिलाना चाहिये। इससे दस्त होकर रोग मिट जाता है।

४-फेफड़ेका बुखार या छूतका निमोनिया (Contagious pleuro-pneumonia)

यह रोग रोगी पशुसे छू जाने, उसके फोड़ा-फुंसीकी मवाद लगने या उसके मुँहके सामने साँस लेनेसे होता है। इससे फेफड़ेपर असर होता है। पशुकी भूख कम हो जाती है, दूध घट जाता है, हल्का ज्वर सदा बना रहता है। धीरे-धीरे पशु अशक्त होकर पैर पीटने लगता है।

बुखारकी दवा ही इसमें देनी चाहिये। नीम, सफेदा, मरुआके पत्ते या तारपीनका तेल पानीमें डालकर उबालिये और उसकी भापमें पशुको साँस लेने दीजिये। १ हिस्सा तारपीनका तेल १० हिस्सा तिलके तेलमें मिलाकर छातीपर मालिश करनी चाहिये।

ऐसे रोगी पशुका दूध नहीं पीना चाहिये। बहुत लाचारी हो तो खूब उबाल लेना चाहिये।

५-खुर तथा मुँहका पकना (Foot and mouth disease)

इस रोगमें पशुके मुँह तथा खुरमें घाव हो जाते हैं, जिससे पशु चारा-पानी छोड़ देता है और निर्बल हो जाता है। यह रोग हवाके द्वारा भी फैलता है। एक पशुको होते ही बहुतोंको हो जाता है। ऐसी स्थितिमें निम्नलिखित उपायोंसे लाभ होता है।

१-अमकली आधा पाव, कटेली पीलीका फूल १ छटाँक—इन दोनोंको औटाकर काढ़ा बनाकर पिलाये।

२-पुराना गुड़ १ सेर तथा सौंफ १ पाव १ सेर पानीमें औटाकर पिलाये।

---

* पाँच सेर जलमें डेढ़ पाव तीसी डालकर नरम आँचसे घंटा भर उबाले। उबालते समय बराबर हिलाते रहना चाहिये, नहीं तो जल जायगी। फिर पतले कपड़ेसे छान ले। बस, यही तीसीका माँड़ है।

३-आधा सेर एप्सम साल्ट गर्म पानीमें डालकर पिलाना चाहिये।

उपर्युक्त दस्तावर दवाइयाँ पेट साफ करनेके लिये हैं। इसके बाद और दवा भी करनी चाहिये—

[१] आँवलेके पानी, बबूलकी छाल-उबाले हुए पानी, फिटकिरी या सुहागेके पानी अथवा तूतियाके पानीसे मुँह और पैर धोये। आँवलेका पानी पिलाये। नीमका तेल या कोलतार पैरोंके घावपर लगाये।

[२] खड़ियामिट्टी २ छटाँक, कोयला आधी छटाँक, फिटकिरी आधी छटाँक, तूतिया (नीलाथोथा) चौथाई छटाँक—इसके चूरनको घावपर भुरभुराना चाहिये।

[३] कपूर, तारपीनका तेल, नीलाथोथा और पत्थरका कोयला मिलाकर घावपर लगाना चाहिये।

[४] बेरके पत्तोंको उबालकर उस जलसे खुरोंको धोना चाहिये। खानेके लिये सूखी घास, चोकर या सहज पचनेवाली चीज देनी चाहिये।

६-छूतसे गर्भ गिरना (Contagious Abortion)

समयसे पहले ही गाय-भैंसोंका बच्चा फेंक देना साधारण बात है, किंतु यह भयानक रोग है। आगे चलकर यह अन्य पशुओंमें भी फैल जाता है। तेज भागनेसे, छलाँग मारनेसे, मर्मस्थलपर चोट लग जानेसे, तोपके शब्दसे तथा किसी विषैली चीजके खानेसे गर्भपात हो जाता है।

सबसे पहले, गिरे हुए बच्चेको अलग कर देना चाहिये। मरा बच्चा हो तो दूर गड्ढेमें दबवा देना चाहिये। गरम पानीमें पोटाश, फिनाइल अथवा नीमके पत्ते डालकर पशुके गर्भस्थानको पिचकारीद्वारा धो देना चाहिये। ८ बूँद कार्बोलिक एसिड गरम पानीमें डालकर पशुको पिलाना चाहिये। पीनेको गरम पानी दीजिये। पशुको १ महीनेतक साँड़के पास न जाने दीजिये। गर्भपातके साथ पशुने जेर न फेंका हो तो निम्नलिखित दवाओंसे उसे अवश्य निकालनेका प्रयत्न करना चाहिये—

१-पुराना गुड़ या साफ शीरा २ सेर, अजवाइन २ छटाँक, सोंठ २ छटाँक, पीपल १ छटाँक और पीपलामूल आधी छटाँक—सबका काढ़ा बनाकर गर्मीमें केवल रातको और सर्दीमें दो बार देना चाहिये।

२-जंगली तरोई १ पाव, नमक आधा पाव, अजवाइन आधा पाव तथा गरम पानी आधा सेर दिनमें दो बार देना उपयोगी माना गया है।

३-एक सेर मिश्रीके टुकड़े-टुकड़े करके गायको खिला दे, इसके पीछे बहुत-सा पानी पिलानेसे जेर अवश्य निकल जाता है।

४-दो सेर छिलके सहित धान खिलानेसे भी जेर गिर जाता है।

५-दो सेर तिल खिलाना भी लाभदायक है।

७-खूनी पेशाब (Red Water)

यह रोग भी कीटाणुओंद्वारा खूनमें विकार पैदा होनेसे होता है। बीमार पशुको काटकर मच्छर जब अच्छे पशुको काटता है, तब उसे भी हो जाता है। पशुको तेज बुखार हो जाता है, आँखें पीली पड़ जाती हैं और पेशाबमें खून आता है।

इस रोगमें एक नीली दवाका—जिसे 'ट्रिपनब्लू' (Trypen blue) कहते हैं—इंजेक्शन दिया जाता है।

८-दूधका ज्वर (Milk-Fever)

इस रोगमें पशुकी आँखें चढ़ जाती हैं, वह खड़ा नहीं रह सकता, पैर पेटके नीचे सिकोड़ लेता है और सिर एक ओर मोड़ लेता है। गर्दन सीधी करनेपर फिर वैसा ही कर लेता है। थन सूज जाते हैं और पशु घबराता है।

रसकपूरकी उड़दके बराबर डली हरे केलेको चीरकर उसके बीचमें रख दे और पशुको खिला दे। थोड़े कपूरयुक्त या सादे तेलकी मालिश करनी चाहिये।

९-माता या चेचक (Cow-Pox)

यह रोग मनुष्योंकी भाँति पशुओंके लिये उतना कष्टप्रद नहीं है, फिर भी सावधान रहना चाहिये; क्योंकि रोग रोग ही है। इस रोगमें शरीरमें दर्द होता है, गाय सोना चाहती है कुछ खाती नहीं, उसे निगलनेमें कष्ट होता है। कभी-कभी पेशाब और गोबर रुक जाता है। थन या शरीरपर छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलती हैं और १०—१५ दिन बाद सूख जाती हैं। ऐसे पशुको अलग रखकर उसको खाना-पानी देना या दुहना सफाईके साथ करना चाहिये। पशुको कोई जुलाबकी दवा या १ सेर एप्सम साल्ट गरम पानीमें मिलाकर पिला देना चाहिये। ऐसी गायका दूध निकालकर फेंक देना चाहिये या खूब उबालकर दही, घी बनाकर काममें लाना चाहिये।

माता पकनेसे ही पहले सेमल-रूईके बीज खिला देनेसे बड़ा लाभ होता है। पहले दिन तीन बारमें ५० (२५, १८, ७), दूसरे दिन दो बारमें २५ (१५, १०) और तीसरे दिन एक बार केवल १०। बहुत कमजोर पशु हो या छोटी उम्र हो तो कम

खिलाना चाहिये।

१०-गजचर्म (Mange)

यह एक प्रकारकी भयंकर खुजली है जो पहले थुई और पूँछपर होती है, फिर धीरे-धीरे सारे शरीरमें फैल जाती है। पशु खुजलाते-खुजलाते घाव कर लेता है, चमड़ी मोटी पड़ जाती है।

जहाँपर खाज हो, वहाँके बाल काटकर गरम पानी और साबुनसे साफ कर देना चाहिये, फिर गोबर और सरसोंका तेल मिलाकर तथा पशुको धूपमें खड़ा करके १०-१५ मिनटतक मालिश करनी चाहिये। मालिशका तेल इस प्रकार बना ले तो और भी अच्छा है। गन्धक १ भाग, घी या तिलका तेल ८ भाग और नीमका तेल चौथाई भाग। गन्धकको महीन पीसकर सब चीजें मिला लीजिये और आगमें भलीभाँति गरम करके मालिश कीजिये। खानेकी दवा भी देनेसे जल्दी लाभ होगा।

खानेका नमक १ छटाँक, महीन पिसी हुई गन्धक आधा तोला आध सेर पानीमें घोलकर पिला देना चाहिये या रोटीमें रखकर खिला देना चाहिये।

खुजली और दाद भी ऐसे ही रोग हैं, पर गजचर्मसे कम भयंकर हैं। इनकी भी दवा प्रायः वही है।

११-कीड़ोंमें दुंबल या मनिया फूटना (Warble Flies)

जिन पशुओंको खरहरा नहीं होता या मल-मलकर जो नहलाये नहीं जाते, उनको यह रोग हो जाता है। वर्षाके अन्तमें इस रोगके कीड़े शरीरपर आ जाते हैं और गर्मीके आरम्भमें अच्छी तरह बढ़ जाते हैं। इस रोगसे पशुको कोई विशेष कष्ट तो नहीं होता, किंतु उसकी खाल रद्दी हो जाती है। अतः इस रोगसे पशुकी रक्षा करनी चाहिये।

चूने और तमाकूके गर्म पानीसे पहले पीडित स्थानको धो देना चाहिये, फिर ढाई सेर पानीमें एक छटाँक ताजा चूना मिलाकर उसमें एक पाव महीन पीसी हुई तमाकू खूब मिलाकर घोल लेना चाहिये। २४ घंटे रखनेके बाद पतले कपड़ेसे छान लेना चाहिये और तब चूना पोतनेवाली मूँजकी कूँची बनाकर उससे यह दवा अच्छी तरह उस स्थानपर लगानी चाहिये। ध्यान रखना चाहिये कि दवा छेदोंसे भीतर पहुँच जाय। यह दवा तैयार न हो तो नीमका तेल लगा देना चाहिये। २ तोला खारी नमक और आधा तोला गन्धक एक पाव गुनगुने पानीमें घोलकर पशुको एक सप्ताहतक पिलाना चाहिये। कब्ज करनेवाली खुराक कम देनी चाहिये।

१२-जूँ (Lice)

यह रोग भी स्पर्शमात्रसे एक पशुसे दूसरे पशुको लग जाता है, किंतु यह उतना हानिकारक नहीं होता। यह प्रायः बच्चोंको होता है। १ भाग तमाकू और २ भाग हाथ-मुँह धोनेका साबुन ४० भाग पानीमें डालकर उबाल लें, फिर ठंडा हो जानेपर १ भाग मिट्टीका तेल मिलाकर मालिश करें।

१३-किलनी (Ticks) लग जाना

थन, पूँछ, कान तथा अन्य स्थानोंमें किलनी चिपट जानेसे पशुको बड़ा कष्ट होता है और उसका दूध कम हो जाता है। पशुओंको किलनियोंके कष्टसे बचाना आवश्यक है।

१-एक भाग नील, २ भाग गन्धक या वैसलीन या कड़ुआ तेल ८ भाग मिलाकर लगानेसे किलनी मर जाती है।

२-नमक ४ भाग, मिट्टीका तेल १ भाग और कड़ुआ तेल ४ भाग मिलाकर लगानेसे भी किलनियोंका नाश होता है।

बिना छूतके साधारण रोग

यद्यपि बिना छूतके रोग उतने भयंकर नहीं होते जितने कि छूतवाले, फिर भी इनमेंसे कोई-कोई ऐसा हो जाता है, जो आगे चलकर बढ़ जाता है और पशुको उससे बचाना कठिन हो जाता है। रोगके समय दवाकी अपेक्षा पशुके रहन-सहन तथा खाने-पीनेकी सुन्दर व्यवस्था होनी चाहिये। दवा तो केवल रोगको थामने अथवा पशुको असली हालतमें जल्दी लानेमें सहायक मात्र है, वास्तवमें उचित देखभालसे ही अधिकांश रोग नष्ट हो जाते हैं। पशुके रहनेका स्थान साफ रखना, उसे हल्का, सहजमें पच जानेवाला और स्वादिष्ट भोजन तथा कुएँका स्वच्छ जल पीनेको देना एवं उसे अलग रखकर अधिक सर्दी-गर्मीसे बचाना ही उसकी देखभाल करना है। यह जानवर है, इसका रोग यों ही अच्छा हो जायगा—ऐसा न सोचकर उसके रोगकी उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

१-अपच

कभी सर्दी-गर्मी लगनेसे या कम-ज्यादा खा लेनेसे पशुको अपच हो जाता है। ऐसी दशामें पशु पूरा खाना नहीं खाता, ठीकसे जुगाली नहीं करता और सुस्त रहता है। ऐसी स्थितिमें—

खारा नमक आध सेर और २ तोला सोंठको कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानीमें घोलकर पिला देना चाहिये। इससे दस्त होने लगेंगे। दस्त न हो तो आधी खुराक फिर देनी चाहिये।

दस्त होनेके अगले दिनसे सोंठ १ तोला, राई १ तोला, अजवाइन २ तोला, सेंधा या साँभर नमक सवा तोला कूट-पीसकर पावभर गरम पानीके साथ कुछ दिनतक सुबह पिलाना चाहिये। यह दवा पिलानेके २ घंटे बादतक पशुको पानी नहीं पिलाना चाहिये।

२-अफरा या पेट फूलना

यह रोग अधिक चरनेसे या बहुत चारा-दाना खा जानेसे होता है। पशुका पेट फूलकर ढोलकी तरह हो जाता है। बायीं ओर सूजन हो जाती है। इसमें नीचे लिखी कोई दवा पिलानी चाहिये।

१-आध सेर एप्सम साल्ट या १ सेर नमक सरसों या रेंड़ीके तेलमें मिलाकर।

२-आमका अचार आध पाव और उसका तेल आध पाव।

३-गाजरकी काँजी १ सेर।

४-आध पाव राई पीसकर गरम पानीके साथ।

५-सोंठ १ छटाँक, हींग ४ माशे, काला नमक १ छटाँक, लाहौरी नमक १ छटाँक, सोंचल नमक १ छटाँक—सबको पीसकर गरम पानीके साथ।

३-पेटमें कीड़े पड़ जाना (Tape Worms)

कभी-कभी पशुओंके पेटमें केंचुए (कीड़े) पड़ जाते हैं, जिससे वह दुर्बल हो जाता है। ये कीड़े गोबरके साथ निकलते हैं। गोबरमें कीड़े दीख पड़ें तो इस प्रकार दवा करनी चाहिये।

१-सुपारीका चूर्ण ४ तोला १ सेर दूधमें मिलाकर दिनमें दो बार ३ दिनतक दीजिये।

२-आधी छटाँक तारपीनका तेल और आध सेर अलसीका तेल हर आठवें दिन महीने भरतक पिलाइये।

४-पेचिश या आँव पड़ना (Dysentery)

जब पशु बार-बार रक्त तथा आँव-मिला हुआ गोबर करे, तब समझना चाहिये कि उसे पेचिशका रोग हो गया है। इसमें—

पहले आधा सेर एप्सम साल्ट गरम पानीके साथ दे या सरसों, रेंड़ी, अलसी और तिलमेंसे—किसीका आध सेर तेल १ छटाँक सौंफके साथ पिला दे; फिर एक छटाँक बेलगिरी और एक छटाँक ईसबगोलके छिलकेको एक सेर चावलके माँड़में मिलाकर पिलाना चाहिये या सूखा आँवला २ तोला, सोंठ १ तोला और शक्कर या बताशा २ तोला आध सेर पानीमें पीस-छानकर दे अथवा जस्ता दो आना भर खड़िया मिट्टीका चूर्ण ढाई तोले और अफीम चार आना भर भातके गाढ़े माँड़के साथ दिनमें दो बार दे। बछड़े-बछड़ीके लिये खड़िया मिट्टी सवा तोला, अफीम दो आना भर और रेवाचीनी १२ आना भर चूर्ण करके तीसीके माँड़के साथ देना चाहिये।

५-पेट चलना या दस्त लगना (Diarrhoea)

इस रोगवाला पशु पतला गोबर करता है। यह अजीर्णका चिह्न है। जल्दी दवा न करनेसे रोग बढ़ जानेसे पशु मर जाता है। इसके बचावके लिये—

१-आधी छटाँक पीसा हुआ काला नमक और एक तोला हीरा कसीस मिलाकर जौके आटेमें चार दिनतक देना गुणकारी है।

२-सौंफ एक तोला, अजवाइन एक तोला, इलायची बड़ी एक तोला तथा चिरायता तीन तोला कूटकर आध सेर जौके आटेमें चार दिनतक खिलाये।

३-चार आने भर पीसा हुआ नीलाथोथा आध सेर गरम पानीमें घोलकर पिलाना चाहिये।

४-एक छटाँक सूखा या हरा बेलका गूदा तथा खड़िया मिट्टी सवा तोला आध सेर गौके मट्ठेमें मिलाकर सबेरे-शाम पिलाये।

५-कत्था आधी छटाँक, ईसबगोल एक छटाँक, खड़िया मिट्टी एक छटाँक, अफीम २ माशा, बेलगिरी एक छटाँक और रसौत दो माशे—इन सबको कूट-पीसकर दिनमें दो बार देना चाहिये।

६-पलासका गोंद सवा तोला, चिरायता पौन तोला, खड़िया मिट्टी ६ आना भर, अफीम १ आना भर भातके माँड़के साथ खिलाना चाहिये।

६-गलेमें कुछ अटकना (Throat-Choking)

कभी-कभी कोई कड़ी या गोल चीज पशुके गलेमें अटक जाती है, जिससे पशु खाना-पीना छोड़ देता है। उसका गला घुटने लगता है। यदि शीघ्र ही अटकी हुई चीज निकालनेका प्रयत्न न किया गया तो पशुकी मृत्यु हो जाती है। इसके लिये—

पहले मुँहमें हाथ डालकर चीज बाहर निकालनेकी चेष्टा करनी चाहिये। बाहर न निकले तो लंबी-पतली और चिकनी लकड़ीसे धक्का देकर उसे भीतर ठेल देना चाहिये। गलेमें वैसलीन या तेलकी मालिश करे और आधा सेर कड़ुआ तेल पशुको पिला दे या थोड़े तिलके तेलमें थोड़ा सुहागा मिलाकर

पिला देना चाहिये।

७-पित्ती उछलना

मनुष्योंकी भाँति पशुओंको भी कभी-कभी पित्ती उछल आती है। शरीरमें बड़े-बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं और खाज होने लगती है। ऐसे पशुको जुलाबकी दवाई देकर कम्बल या झूल उढ़ा देना चाहिये फिर नीचे लिखेमेंसे कोई एक दवा पिलानी चाहिये।

१-आध पाव गेरू और आध पाव शहद पाव भर गरम पानीके साथ पिलाये।

२-नीमके पत्ते ३ तोला, अड़ूसा (बासा)के पत्ते ३ तोला, शीशमके पत्ते ३ तोला—इन सबको आध सेर पानीमें उबाल ले, जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठंडा करके पिला दे।

८-खाँसी (Bronchitis)

पशुओंके समस्त रोगोंमें यह बहुत बुरा रोग है। इस रोगके अधिक बढ़ जानेसे गाभिन पशु कभी-कभी बच्चा फेंक देता है। इस रोगकी चिकित्सा तुरंत करनी चाहिये—

१-नौसादर, सोंठ तथा अजवाइन एक-एक तोला लेकर पावभर गरम पानीके साथ पिलाने चाहिये।

२-एक छटाँक नमककी डली लेकर कुछ आकके पत्तोंमें लपेटकर रातमें भून लीजिये। सवेरे नमकको पावभर गरम पानीके साथ लगातार ३ दिनतक पिलाइये।

३-एक छटाँक सूखे अनारके छिलकेको पीसकर एक छटाँक मक्खनके साथ खिलाइये।

४-केलेके सूखे पत्तोंकी राख २ तोला, मक्खन ४ तोला तथा कच्चा दूध १० तोला ३ दिनतक दीजिये।

५-आध सेर अलसीके तेलके साथ १ तोला तारपीनका तेल पिलाना भी लाभदायक है।

६-कपूर छः माशा, कलमी शोरा एक तोला, अजवाइन २ तोला, सोंठ २ तोला, नौसादर १ तोला, अलसी पीसी हुई १ छटाँक—इन सबको कूट-पीसकर गुड़के साथ दिनमें तीन बार खिलाना चाहिये।

९-निमोनिया (Pneumonia)

बहुधा यह रोग शीतकालमें होता है। सर्दी लग जानेसे पशुको ज्वर आ जाता है। नाकसे पानी बहता है और खाँसी भी कुछ-कुछ आने लगती है। इस स्थितिमें पशुको गरम स्थानमें रखना चाहिये और पीठपर कम्बल या झूल डाल देना चाहिये। ओषधियाँ नीचे लिखी हैं—

१-सोंठ २ छटाँक, अजवाइन २ छटाँक तथा चायकी पत्ती आधी छटाँक, मेथी २ छटाँक तथा गुड़ या शीरा आध सेर औटाकर दिनमें २ बार पिलाना चाहिये।

२-आध सेर पीसा हुआ नमक और एक छटाँक अजवाइन लेकर दो बलवान् पुरुषोंसे मालिश करा दे।

३-कपूर ४ माशा तथा लहसुन एक पाव—दोनोंको मिलाकर खिला दीजिये।

४-खानेको प्याज दे और उसका पानी निकालकर तथा नमक डालकर पिलाये।

५-आध सेर अलसी और एक सेर चावल दोनोंको उबालकर गरम पानीमें मिलाकर खिलाये।

१०-पेशाबमें खून आना

बीमारी, चोट लगने या अधिक गर्मीसे यह रोग हो जाता है। इस रोगमें बबूलके पत्ते ४ छटाँक और हल्दी २ तोला पीसकर सुबह-शाम पिलाये अथवा आध सेर दूधमें बारीक पीसी हुई फिटकिरी १ तोला मिलाकर कई दिनतक पिलाये।

११-पेशाब न होना

यह रोग पुट्ठेकी कमजोरी या पथरी हो जानेसे होता है। सूखा चारा खिलाने और कम पानी पिलानेके कारण भी हो जाता है। इसमें शोरा १ तोला, धनिया २ तोला और कपूर ३ माशा घोट-पीसकर ठंडे पानीमें घोलकर पिलाना चाहिये। नीमके पत्ते उबालकर और नमक मिलाकर मूत्र-स्थानपर लगाइये।

१२-पेशाब टपकते रहना

यह रोग भी प्रायः पथरी हो जानेसे होता है। अतः पशुओंके डॉक्टरसे ऑपरेशनद्वारा पथरी निकलवा डालनी चाहिये। दवा नीचे लिखी है—

१-मक्काकी बाल २ छटाँक तथा काली मिर्च एक तोला पीसकर सबेरे-शाम पिलाइये।

२-मक्काकी बाल न मिले तो खरबूजेके छिलके एक पाव एक तोला काली मिर्चके साथ पीसकर पिलाइये।

१३-फोतोंका सूजना

कभी चोटसे, कभी बादीसे या कभी इस रोगके कीटाणुओंसे फोते सूज जाते हैं। पशुको बड़ा कष्ट होता है, वह पिछले पैर फैलाकर चलता है। निम्न उपचार करने चाहिये—

१-गीले कपड़ेसे बार-बार ठंडा पानी फोतोंपर डालकर ठंडक पहुँचाइये।

२-हल्दी, चूना, फिटकिरी—सबको बारीक पीसकर कड़ुआ तेलमें मिलाकर गरम कर ले और फोतोंपर सुहाता हुआ लेप करे।

३-इमलीके पत्ते और नमक पीसकर गरम कर ले और फोतोंपर लगा दे।

यदि बादीसे सूज गये हों तो रेंडीका तेल ३ छटाँक और त्रिफलाका पानी पावभर मिलाकर पिलाइये तथा तमाकूके पत्ते गरम करके बाँधिये।

१४-मिरगी (Apoplexy)

यह रोग प्राय: बच्चोंको होता है या किसी कारणसे सिरकी ओर रक्तका बहाव हो जानेसे बड़े पशुओंको भी हो जाता है। पशु सहसा काँपने लगता है, गिर जाता है, नेत्र लाल हो जाते हैं। इसके लिये—

रोगीको दिनमें चार बार ठंडे जलसे स्नान कराना चाहिये। दवाएँ नीचे लिखी हैं—

१-बबूल और बेरके आध-आध पाव कोमल पत्ते पीसकर आध सेर ठंडे पानीमें पिलाइये।

२-ढाकके बीज एक तोला, अनारकी छाल एक तोला, सौंफ एक तोला, अमलतास १ तोला—इन सबको आध सेर पानीमें पकाये, जब पानी पावभर रह जाय तब गुनगुना पानी पिला देना चाहिये। इसके बाद मीठा सरसों या अलसीका आध सेर तेल तथा आधी छटाँक तारपीनका तेल पिलाये। बेहोशीकी दशामें रीठेका छिलका पीसकर सुँघावे या कंडेकी राखमें आकका दूध मिलाकर सुँघाये।

१५-ज्वर (Fever)

खाने-पीनेकी गड़बड़ीसे, मौसम बदलनेसे या मच्छर काटनेसे पशुको ज्वर हो जाता है। इसमें निम्न उपचार करे—

१-आठ औंस एप्सम साल्टमें ४ माशा कुनैन मिलाकर गरम पानीमें घोल ले, फिर ४ माशा कपूर और ८ माशा शोरा मिलाकर दिनमें ३ बार पिलाये।

२-गोमा घासके फूल एक छटाँक और काली मिर्च एक तोला आध सेर पानीमें गरम करके पिलाये।

३-शोरा सवा तोला, नमक ढाई तोला तथा चिरायता ढाई तोला आध पाव राब या गुड़में मिलाकर खिला दीजिये।

१६-बिल्ल या सफेद झागवाला कीड़ा

घासमें एक प्रकारका कीड़ा होता है, जिसको खा जानेसे पशुका शरीर अकड़ जाता है, हाथ-पैर न हिलाकर वह चुपचाप पड़ा रहता है। ऐसी दशामें उसे आरामसे पड़े रहने देना चाहिये। उसके ऊपर कम्बल डालकर ऊपर छाया भी कर देनी चाहिये। इसके लिये निम्न उपचारका प्रयोग कर सकते हैं।

१-एक सेर प्याज खिलाकर थोड़ी देरके लिये उसका मुँह बाँध दीजिये।

२-आध पाव सज्जी पानीमें घोलकर पिलाइये।

३-एक तोला पिसी हुई काली मिर्च पावभर घीमें मिलाकर और गरम करके पिला दीजिये।

१७-ताव या घामड़ा (Sunstroke)

कड़ी गरमीमें लू लगनेसे या धूपमें अधिक समयतक काम करनेसे यह रोग हो जाता है। पशु छाया या पानीमें बार-बार बैठता है, कम खाता है और दुबला होता जाता है। इसके लिये नीचे लिखे उपचारका प्रयोग करे।

१-कच्चे आमका पना सबेरे-शाम पिलाइये।

२-पावभर सफेद तिल रातको भिगो दीजिये और सबेरे पीसकर सात दिनतक पिलाइये।

३-शीतकालमें यह रोग हुआ हो तो पुरानी मूँज १ पाव काटकर उसे एक सेर गुड़में डालकर अच्छी तरह औटाना चाहिये और दिनमें दो बार ४ दिनतक देना चाहिये या पशुकी पूँछमें थोड़ा नश्तर लगाकर २ रत्ती अफीम भर दे और पट्टी बाँध दे।

४-यदि ग्रीष्म-ऋतु हो तो आध सेर मसूरकी दाल उबालकर और ४ तोला नमक डालकर ४ दिनतक खिलाये।

५-शीशम, लिसोड़ा और बबूल—तीनोंकी आध-आध पाव पत्तियाँ लेकर २४ घंटे पानीमें पड़ी रहने दे, फिर निकालकर आध पाव सूखे आँवले और एक पाव कच्ची खाँड़ डालकर पिला दे।

६-पशुकी साँस तेज चलती हो तो थोड़ी-सी कपास कड़ुवे तेलमें भिगोकर खिलाना लाभदायक है।

१८-विष खा जाना (Poisoning)

कभी-कभी कोई पशु चारेके साथ कोई घोर विषैला कीड़ा खा जाता है या कोई दुष्ट मनुष्य विष खिला देता है, ऐसी दशामें नीचे लिखी दवाइयाँ करनी चाहिये—

१-डेढ़ सेर घीमें एक सेर एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये।

२-कोई जुलाबकी दवा दे देनी चाहिये।

३-एक सेर गरम दूधमें आधी छटाँक तारपीनका तेल अच्छी तरह मिलाकर पिलाइये और फिर केलेकी जड़का रस एक पाव तथा एक तोला कपूर मिलाकर पिलाना चाहिये।

१९-चरीद्वारा विष खा जाना (Corn-Stalk)

वर्षाके दिनोंमें जब पानी पड़ना बंद हो जाता है और चरी छोटी हो जाती है, तब उसमें एक प्रकारका विष उत्पन्न हो

जाता है वही चरी खा लेनेसे पशुको विष चढ़ जाता है और वह तत्काल गिर पड़ता है। दाँत-जीभ काले पड़ जाते हैं। इस स्थितिमें—

पशुको शीघ्र किसी तालाब या नदीमें डाल दे। यह सम्भव न हो तो उसके ऊपर खूब पानी छोड़े। गीली जगहसे कीचड़ लेकर सारे शरीरपर पोत दे। जुलाबकी कोई ओषधि दे।

१-आध सेर सज्जी २ सेर पानीमें घोलकर पिलाये।

२-एक सेर कड़ुआ तेल पिलाये या एक सेर चूल्हेकी (लकड़ीकी) राख पानीमें घोलकर पिलाये।

३-आध सेर घी और दो सेर दूध पिलाये या आध पाव कत्था एक सेर ठंडे पानीमें घोलकर पिलाये।

४-काली मिर्च १तोला, हींग १ तोला, सोंठ १ तोला, अजवाइन १तोला, काला नमक २ तोला—सबको महीन पीसकर आध सेर गुनगुने पानीमें मिलाकर पिलाना चाहिये।

२०-लकवा (Paralysis)

इस रोगमें पशुका आधा या सारा अङ्ग निर्जीव हो जाता है। उस स्थानपर सुई चुभोनेसे दर्द नहीं होता। इसके लिये निम्न उपचारोंको काममें लाना चाहिये—

१-शरीरको गरम रखना और लकवा मारे हुए अङ्गपर कपूर तथा मीठे तेलकी मालिश करना।

२-कुचला ४ माशा, सोंठ ६ माशा, हीरा कसीस ६ माशा, नमक आधी छटाँक—सबको कूट-पीसकर आध सेर गरम पानीमें घोलकर पिलाइये।

३-आधी छटाँक सरसों पीसकर पानीमें लेप बना लीजिये और लकवेके स्थानपर लगाइये।

२१-गठिया या जोड़का दर्द (Rheumatism)

सर्दीसे, वर्षामें भीगनेसे या रक्त-विकारसे यह रोग हो जाता है। पैरोंके जोड़ोंपर सूजन आ जाती है। इसमें निम्न उपचारोंका प्रयोग कर सकते हैं—

१-दो सेर सूखी या ३ सेर हरी गोमाबूटी (मलडोडा) को कतरकर ५ सेर पानीमें औटाये, १ सेर रह जानेपर बूटी निकालकर फेंक दे। दो छटाँक पिसी हुई काली मिर्च और एक पाव काला नमक डालकर ७-८ दिनतक पिलाये।

२-एक सेर कड़ुई तरोई ५ सेर पानीमें उबाले, जब पानी एक सेर रह जाय, तब उसे छानकर आध पाव काली मिर्च तथा पावभर काला नमक डालकर दो भाग कर ले और सबेरे-शाम पिलाये।

३-एक सेर पिसी हुई मेथीमें आध सेर गुड़ और एक छटाँक अजवाइन मिलाकर १५ दिनतक खिलाये।

४-दो घुँघची (सोना तौलनेवाली रत्ती) पीसकर आध सेर गुड़में ४ दिनतक खिलाना चाहिये।

५-एक तोला कपूर, एक छटाँक तारपीनका तेल तथा एक पाव तिलके तेलको खूब मिलाकर मालिश करना चाहिये।

६-एक पाव लहसुन कुचलकर आध सेर तिलके तेलमें पकाये और फिर तेल छानकर मालिश करे।

२२-प्रसूतका ज्वर

यह रोग प्रसूतके दुःख-दर्दसे बच्चेकी उतरी हुई झिल्ली भीतर रहकर सड़ जानेसे अथवा ब्याते समय ग्वालेके मैले-कुचैले हाथ लगकर नाखूनोंका विष चढ़नेसे हो जाता है। इस स्थितिमें पहले घी-मिली हुई दस्तावर दवा देनी चाहिये, फिर थोड़ी गिल्सरीन और जरा-सा कार्बोलिक एसिड पानीमें डालकर पिलाना चाहिये।

सोंठ, अलसी तथा काली मिर्च एक-एक तोला एवं नौसादर आधा तोला कूट-पीसकर एक पाव गुड़में खिलाइये।

पीनेके लिये एक तोला कलमी शोरा मिलाकर गुनगुना पानी दीजिये।

२३-थन सूजना (Udder Inflammation)

कभी-कभी बच्चेके जोरसे मुँह मार देनेसे, दूसरे पशुके सींग मार देनेसे या दूधका अत्यधिक जोर होनेपर थन सूजकर कड़े हो जाते हैं। इसमें—

१-एक छटाँक कलमी शोरा आध सेर गरम पानीमें मिलाकर तीन दिनतक पिलाना चाहिये।

२-नीमके पत्तोंके उबले हुए पानीसे सेंक करनेके बाद गेरू और अजवाइन पानीमें मिलाकर पकाये और फिर लेप कर दे।

२४-योनिमें कीड़े पड़ना

नीमके पत्ते पानीमें उबालकर उससे पिचकारीद्वारा धोइये, फिर तारपीनका तेल और मीठा तेल मिलाकर रुईके फाहे डुबोकर चिमटीसे अंदर कर दीजिये। इस प्रकार सबेरे-शाम कई दिनोंतक दवा लगानी चाहिये।

२५-बच्चेदानीका बाहर निकलना

बुढ़ापे या कमजोरीके कारण या जेर गिराते समय जोर लगानेके कारण बच्चादानी बाहर निकल आती है। जब ऐसा अवसर आये, तब उसे फिटकिरीके पानीसे अच्छी तरह धोकर भीतर दबा दे और उस स्थानपर एक मुसका चढ़ा दे। साथ ही निम्न उपाय करे—

१-आध पाव फिटकिरी पानीमें घोलकर पशुको पिलाये।

२-एक पाव सूखा कतीरा गोंद सबेरे-शाम खिलाकर आधी छटाँक रसौत २ सेर पानीमें घोलकर पिलाये।

३-आधा तोला सोंठ और एक तोला कालीमिर्च पावभर गरम घीमें मिलाकर ३-४ दिनतक पिलाये। बच्चेदानीको भीतर करके पशुको ऐसा खड़ा करे कि पिछला भाग ऊँचा रहे।

२६-साडू रोग (Garget or Mammitis)

दूधवाले पशुओंके लिये यह बहुत बुरा रोग है। इसमें थन सूज जाते हैं। पशु थनोंमें हाथ नहीं लगाने देता। यह रोग कुसमयपर या बार-बार दूध निकालनेसे, थनोंमें चोट लगनेसे, गोबर करते समय पिछले पुट्ठोंपर लाठी मारनेसे, दुहते समय थन जोरसे खींचनेसे या धानका छिलका खा जानेसे होता है। इसमें—

१-रेंड़ीका तेल गरम करके थनोंपर मले।

२-पोस्ताके एक डोंड़ेको तथा नीमके पत्तोंको सेरभर पानीमें डालकर भापसे सेंक करे।

३-आध सेर दही और पावभर मीठा तेल ३ दिनतक शामको देना चाहिये।

४-आध सेर सहजनकी पत्ती घोंट-छानकर आधी छटाँक काली मिर्च और एक छटाँक नमक मिलाकर ३ दिनतक देना चाहिये।

५-आध सेर घी, एक छटाँक काली मिर्च और आध पाव नीबूका रस ३ दिनतक पिलाये।

६-जाड़ेकी ऋतु हो तो नमक, तेल और अजवाइन डालकर काँसीके बर्तनसे पुट्ठेपर मालिश करे।

७-बीमारी अधिक बढ़ गयी हो तो १ सेर घी, ४ सेर गुड़ या शीरा, आध सेर काला जीरा तथा आध सेर कालीमिर्च डालकर पिलाना चाहिये।

८-दूध निकालकर फेंक देना चाहिये। पीब पड़ गयी हो तो चिरवाना ठीक है।

२७-मुँहसड़ी या अँगियारी

यह भी थनोंका रोग है और इसके भी वे ही कारण हैं, जो साडू रोगके हैं। थनके सोतके ऊपर एक छोटी पीली-सी पपड़ी जम जाती है और फिर फुंसीकी तरह हो जाती है। इसके लिये—

१-रेंडीके तेलमें थोड़ा नमक डालकर गर्म करे और दिनमें ४-५ बार मालिश करे।

२-नीमके पत्ते गरम करके भापसे सेंके।

३-एक सेर पानीमें एक पाव कत्था घोल-छानकर पिलाना चाहिये।

२८-चन्द्री

यह बहुत बुरा और हानिकारक रोग है। पहले थनके ऊपर छोटी-सी एक गिल्टी होती है, फिर थन सूजकर उसमें पीब पड़ जाती है। गिल्टी फूटकर थनमें छेद हो जाय तो नीचे लिखी दवाइयाँ भर देनी चाहिये—

१-आकका दूध, साँपकी केंचुल और लहसुन—इनको बराबर पीसकर घावके ऊपर लगा दे और सावधानीसे पट्टी बाँध दे।

२-नीमकी कोंपलोंको पीसकर एक टिकिया बनाये, उसे गायके घीमें लाल करे। फिर टिकिया फेंककर उस घीको घावमें दिनमें ४-५ बार लगाये।

२९-थनका मारा जाना (Blind Teats)

थनकी किसी बीमारीसे थन मारा जाता है और दूध नहीं निकलता। यह रोग है तो असाध्य, किंतु सम्भव है नीचे लिखी दवाइयाँ लाभ कर जायँ।

जब थन मारी हुई गाय गाभिन हो जाय, तब एक पाव सरसोंका तेल प्रत्येक शुक्ल पक्षकी दूजको बच्चा देनेतक बराबर देते रहना चाहिये। बच्चा देनेके कुछ घंटे पहले आधी छटाँक हींग चने या जौकी रोटीमें खिला दे।

यदि किसी पशुका थन जल्दी ही दो-चार दिनसे बंद हुआ हो तो आध पाव काली जीरी और आध पाव काली मिर्च पीसकर आध सेर गरम पानीमें मिलाकर दिनमें दो बार ३ दिनतक देना चाहिये। अथवा ४-५ कागजी-नीबुओंका रस एक पाव घीमें मिलाकर दोनों समय दीजिये।

३०-थनोंका कट जाना (Sore Teats)

दूध पीते समय बच्चेका दाँत लगनेसे या ऊपरी चोट लगनेसे थनपर घाव हो जाता है, इसकी दवा शीघ्र कर लेनी चाहिये—

१-तवा गर्म करके थनके नीचे रखे और दूधकी धार छोड़े। उसके भापसे लाभ होगा।

२-थोड़ा मक्खन या घी लेकर पिसी हुई हल्दी और थोड़ा नमक डालकर दूध दुहनेके पीछे घावके ऊपर लगा दे।

३१-बच्चा देनेके पीछे दूध न उतरना या थोड़ा उतरना

गाभिन होनेपर कोई-कोई लोग पशुको दुहना एकदम बंद कर देते हैं, जिससे थनोंमें दूध सूख जाता है और रोग हो जाता है। अतः धीरे-धीरे दूध सुखाना चाहिये। साथ ही—

१-गरम घी और नमकसे थनों और हवानेपर मालिश करना चाहिये तथा दूध थोड़ा-बहुत अवश्य निकालना चाहिये।

२-एक सेर सनके बीजका आटा १ सेर शीरेमें मिलाकर ३ भाग करे और दिनमें ३ बार आठ रोजतक दे तो पूरा दूध उतर आता है।

३-गायका दूध २ सेर, गुड़ या शीरा १ सेर, गेहूँका दलिया १ सेर, मोटा चावल १ सेर—इन सबको २ सेर पानीमें औटाकर आधा सबेरे और आधा शामको देनेसे अच्छी जातिके पशुका दूध अवश्य बढ़ जाता है।

३२-बाँझपन (Barrenness)

पैदा होते ही पूरा दूध न पानेपर, अच्छी खुराक न मिलनेपर, समयपर साँड़ न मिलनेपर या जुड़वाँ बच्चोंमेंसे एक नर तथा एक मादा होनेपर उस मादाको प्रायः बाँझपनका रोग होता है। इसमें—

१-आधी छटाँक फास्फेट सोडा गरम पानीमें डालकर योनिको बराबर धोते रहना।

२-किसी निपुण चिकित्सकसे गर्भाशयका मुँह खुलवा देना।

३-गायको बराबर साँड़के साथ रखना।

४-दो सेर सनके हरे पत्ते रोज खिलाना।

५-एक सेर सनके बीजका आटा आध सेर गुड़में मिलाकर १५ दिनतक खिलाना।

६-सात छुहारोंकी गुठली बासी जौकी रोटीमें रखकर सात दिनतक खिलाना।

७-दो सेर अङ्कुर निकले हुए गेहूँ या जौ १५ दिनतक खिलाना।

८-ढाई पाव मेथी महीन पीसकर पानीमें लुगदी बनाकर ३-४ दिनतक सबेरे देना।

३३-गायका बार-बार गर्भस्राव होना

यह रोग गरम खुराक या गायकी गर्भ-धारणकी शक्ति कम हो जानेसे होता है। गर्म दूर करनेके लिये गायको ठंडी खुराक देनी चाहिये। एक बार गाभिन होते ही पावभर घीमें आधा तोला पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर दीजिये। इसके बाद नीचेकी दवा दें।

१-गाभिन होनेके बाद दो सेर लिसोड़ेके हरे पत्ते खिला दीजिये। जिस दिन गाभिन हो, उस दिन खाना न दीजिये और दें तो कम तथा ठंडा।

२-गाभिन होनेके २-१ दिन पहले अंकुर निकले हुए ४ सेर गेहूँ या जौ खिला दीजिये। इसे ४-५ दिनतक खिलाइये।

३-पावभर सफेद तिल रातमें भिगो दें, सबेरे घोट-पीसकर गाभिन होनेके दिन और २ दिन बादतक पिला दें। सर्दीके दिनोंमें इसे नहीं देना चाहिये।

३४-सर्पका काटना

सर्पके काटनेका विश्वास हो जानेपर ५ भाग पारामाग्नेट् पोटाश ९५ भाग पानीमें मिलाकर काटी जगहके भीतर पिचकारीसे भर दे और काटी जगहके ऊपर रस्सीसे कसकर बाँध दे।

३५-कुत्तेका काटना

पशुको कुत्तेके काटनेसे जो घाव हो जाय, उसको कास्टिक पोटाशसे जला देना चाहिये। यह दवा न मिले तो लाल मिर्चके बीज घावमें भर देना चाहिये।

शरीरके ऊपरके साधारण रोग

पशु परस्पर लड़ते-भिड़ते रहते हैं, जिससे उनके किसी अङ्गपर चोट आ जाती है। चोट आदि न लगनेपर भी कभी-कभी आँख, कान आदिमें कोई विकार हो जाता है। रक्तके विकारसे भी कहींपर सूजन हो जाती है। इन सब रोगोंको साधारण समझकर उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इनको अच्छा कर डालना ही ठीक है, नहीं तो आगे चलकर पशुको भारी कष्ट हो सकता है।

१-सूजन और दर्द

चोट, सर्दी, गर्मी या रक्तके विकारसे शरीरके किसी भागपर सूजन आ जाती है। चोटकी सूजन हो तो नीमके पत्ते उबालकर उस पानीसे सेंकना चाहिये, फिर सुहागा तवेपर फुलाकर तिल, घी, वैसलीन या मक्खनके साथ सूजनकी जगहपर चुपड़ देना चाहिये।

यदि रक्त-विकारसे सूजन हो गयी हो तो नीमके पत्ते उबालकर सेंके। फिर १ तोला गेरू, २ तोला मकोयके रसमें मिलाकर लेप कर दे या हल्दी-चूना मिलाकर लेप करे।

भीतरके किसी भागमें दर्द हो तो पंद्रह मिनटसे आधे घंटेतक फलानेल या कम्बलको गरम जलमें डुबाकर निचोड़कर उसका सेंक करना चाहिये। फिर सूखे कपड़ेसे भलीभाँति पोंछकर सरसोंका तेल ४ भाग और तारपीनका तेल २ भाग खूब मिलाकर मालिश करनी चाहिये।

२-रसौली और मस्सा

कई बार खालके नीचेसे गेंद-सी बनकर सूजती या बढ़ती चली जाती है या काले-काले मस्से निकल आते हैं। इनसे

पशुको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं होता, पर उसकी खाल बिगड़ जाती है। इससे इनको हटाना चाहिये।

रसौलीमें सूजनकी भाँति सेंक करना चाहिये। इससे न दबे तो ३ हिस्सा पानी और १ हिस्सा कच्चे पपीतेका दूध मिलाकर रख लीजिये और रुईके फाहेसे दिनमें कई बार लगाइये।

मस्सेपर नाइट्रिक एसिड, पपीतेके दूधमें मिला हुआ पानी या चूना-सज्जीमें थोड़ा पानी डालकर दिनमें कई बार लगाइये। चूना-सज्जी किसी काँचके बर्तनमें या सीपियामें रखे।

३-फोड़ा-फुंसी और घाव (Abscess)

किसी पशुको फोड़ा हो जाय तो उसे अच्छी तरह पक जाने दीजिये। फिर चीरकर उसकी पीब निकाल देना चाहिये। इसके बाद नीमके पत्तोंको पानीमें उबालकर उस पानीसे घावको धोइये और नीमका तेल लगा दीजिये अथवा सरसोंका तेल, तारपीनका तेल और कपूर एक-एक छटाँक लेकर और उसमें चौथाई छटाँक फिनाइल डालकर घावपर लगाते रहिये। अथवा पत्थरका कोयला, खड़िया मिट्टी, फिटकिरी और नीलाथोथा—चारोंको बराबर लेकर उनका चूर्ण करके लगाइये। घाव बड़ा हो तो नीमका तेल और मोम मिलाकर लगाना चाहिये।

घावको कभी खुला नहीं छोड़ना चाहिये, नहीं तो स्याई नामकी मक्खी उसपर बैठती है और घावमें कीड़े पड़ जाते हैं। यदि कीड़े पड़ गये हों तो आडू या मरुएके पत्तोंको पीसकर उसकी टिकिया घावपर रख दीजिये और मुल्तानी मिट्टीसे घावके ऊपर लीप दीजिये, जिससे घावको हवा न लगे ऐसा करनेसे कीड़े मर जायँगे, तब पीछे घावको अच्छा कर लीजिये। गहरे घावमें कपूर एक भाग, इसका चतुर्थांश तारपीनका तेल और इतना ही तीसीका तेल खूब मिलाकर लगाना चाहिये।

४-हड्डी-पसलीकी चोट

बहुधा लड़ने-भिड़नेसे हड्डीमें चोट पहुँच जाती है या हड्डी टूट जाती है। हड्डी टूट गयी हो या उतर गयी हो तो किसी जानकारसे या पशुओंके डॉक्टरसे उसे ठीक कराना चाहिये। किसी जानकार आदमीके मिलनेके पहले नीचे लिखी दवाइयाँ करें—

१-पीपलकी हरी छाल ५ सेर पानीमें उबाले, जब पानी २ सेर रह जाय तो चोटपर सेंक करे।

२-भेड़के दूधमें पीली कटेरियाँ औटावे और चोटकी जगहपर सेंक करे तथा लेप कर दे।

३-एक छटाँक फिटकिरी, आधी छटाँक हल्दी तथा १ सेर दूध पशुको तुरंत पिला देना चाहिये।

५-खुरमें कील-काँटोंका चुभना

यदि खुरमें कील-काँटा या कोई नुकीली चीज चुभ गयी हो, तो उसे निकालकर कपूर और तारपीन-मिले हुए तिलके तेलमें रुईका फाहा भिगोकर सावधानीसे भीतर कर देना चाहिये और आस-पास भी तेल चुपड़ देना चाहिये। दो-चार रोज करनेसे आराम हो जायगा।

६-सींग टूटना या सड़ना

लड़ने-भिड़नेसे या लाठीकी चोटसे सींग टूट जाते हैं। सींग दो प्रकारसे टूटते हैं—एक तो जड़से निकल जाते हैं, दूसरे सींगके ऊपरका केवल खोल निकल जाता है।

जड़से टूटनेपर छोटी बेरीके पत्ते पीसकर घावमें भर दीजिये और ऊपरसे कपड़ा बाँधकर नीमका तेल डालते रहिये। यदि खोल उतर गया हो तो उड़दकी पीठीमें आदमीके सिरके बाल सानकर सींगके ऊपर थोप दीजिये और कपड़ा बाँधकर नीमका तेल डालते रहिये। अथवा मुल्तानी मिट्टीको सींगपर लपेटकर ऊपरसे बाल लपेट दे या सीमेंट अथवा चूना घावमें भरकर कपड़ा बाँध दे और नीमका तेल डालता रहे।

सींग टूटनेसे घाव सड़ गया हो या कीड़े पड़ गये हों तो नीमके पानीसे धोकर तारपीनके तेलमें रुईका फाहा दिनमें दो-तीन बार रखना चाहिये।

७-कानमें मवाद पड़ना या घाव होना

कानमें घाव हो गया हो तो उसे नीमके पानीसे धोकर १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा (भुना हुआ) और २० हिस्सा सरसोंका तेल मिलाकर घावपर लगाना चाहिये। अथवा आकका तेल घावपर लगाकर २-४ बूँदें कानमें भी छोड़ दे।

८-आँखका रोग (Sore Eyes)

आँखका रोग बहुधा किसी जंगली जड़ी-बूटीके लगनेसे या लड़ने-भिड़नेसे होता है। आँखके रोगमें आँखोंसे पानी और कीचड़ बहता है। इसके लिये निम्न उपचार करे—

१-फिटकिरी पीसकर पानीमें घोल-छान ले और इससे आँख धोये।

२-नमक और सहजनके पत्ते रातमें भिगो दे। सबेरे घोट-छानकर उस पानीसे धोये।

३-सहजनके बीजको रगड़कर पानीमें डाले और आँख धोये। कुछ दिन रोशनीसे बचाये।

९-बैलका कंधा आना या फार लगना

कंधा आ जानेपर नमक-मिले गरम पानीसे सेंक करना चाहिये।

हल जोतते समय बैलके उछलनेसे यदि फार लग जाय तो घावपर तुरंत मूत्र लगा देना चाहिये। ३-४ दिन करनेसे अच्छा हो जायगा।

१०-आगसे जल जाना

पशुके जल जानेपर तुरंत चूना या चूनेके पानीको वैसलीनमें मिलाकर लगाना चाहिये। १०० बार फेंटा हुआ गायका घी भी बहुत लाभ करता है। चूनेके पानीमें तिल, रेंडी या नारियलका तेल मिलाकर फेंटनेसे एक मलहम बन जायगा, उसके लगानेसे भी अच्छा होता है।

११-बाबनी अर्थात् पूँछका घाव

पहले पूँछकी चौंरीके बाल खुजलीसे उड़ते हैं और धीरे-धीरे घाव होकर पूँछ गलने लगती है। इसके लिये सल्फ्यूरिक एसिडको चौड़े मुँहकी बोतलमें भरकर घाववाले सिरेको ५ मिनटतक उसमें डाले रहे और फिर कपड़ा बाँध दे।

इस प्रकार अपने पशुओंकी यथासम्भव चिकित्सा करनी चाहिये। किसी योग्य अनुभवी चिकित्सकका परामर्श अवश्य लेना चाहिये। कभी-कभी ठीक अनुपात एवं प्रयोगका ज्ञान न होनेसे लाभके बदले हानि होनेकी भी आशंका रहती है। गोशालामें यथासम्भव साधारण उपयोगमें आनेवाली औषधियाँ बराबर रखनी चाहिये, ताकि तात्कालिक चिकित्सा की जा सके। पशुओंके प्रति प्रेम-भाव रखते हुए उनके दुःख-दर्दकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

आयु

गाय और बैलकी अधिक-से-अधिक आयु प्रायः २५ वर्षकी होती है। जलवायु, लालन-पालन तथा परिश्रम आदिके कारण इसमें कमी-वेशी भी हो सकती है। आमतौरपर इनकी औसतन आयु १२ वर्षके लगभग होती है। एक बछिया ३ वर्षकी उम्रके आस-पास बिया जायगी। कोई-कोई गायें १२-१४ महीने बाद दुबारा बिया जाती हैं। कम-से-कम गायको १८-२० महीने बाद दुबारा जरूर बिया जाना चाहिये।

१०-१२ वर्षकी उम्रतक गाय ५-७ अच्छे बछड़े-बछिया दे देती है। कोई-कोई गाय १०-१२ बच्चे भी जनती है, परंतु प्रायः १५-१६ वर्षकी उम्रके बाद वह बच्चे देना बंद कर देती है।

दाँत और सींगोंके द्वारा इनकी उम्र पहचानी जाती है।

नये बच्चेके दूधके २ दाँत होते हैं।

१५ से २१ दिनतकके बच्चेके दूधके ४ दाँत होते हैं।

एक महीनेके बच्चेके दूधके ८ दाँत होते हैं।

तीन-चार महीनेके बाद ये दाँत पुष्ट होने लगते हैं और १५ से १८ महीनेकी उम्रतक सब पुष्ट हो जाते हैं। फिर उम्र पाकर ये उखड़ जाते हैं और इनके स्थानपर असली पक्के दाँत निकल आते हैं।

दो-ढाई वर्षकी उम्रमें २ पक्के दाँत आ जाते हैं।

तीन-साढ़े तीन वर्षकी उम्रमें ४ पक्के दाँत आ जाते हैं। (इस समय पशु पूर्ण युवा हो जाता है।)

चार-पाँच वर्षकी उम्रमें ६ पक्के दाँत आ जाते हैं।

पाँच-छः वर्षकी उम्रमें ८ पक्के दाँत आ जाते हैं।

इस प्रकार मुँहमें काफी समयतक रहनेवाले आठों दाँत पूरे हो जाते हैं। यदि इनमेंसे कोई दाँत टूट जायगा तो वह दुबारा नहीं निकलेगा, इसीसे ये स्थायी या पक्के कहलाते हैं।

गाय-बैलोंके निचले जबड़ेमें दाँत होते हैं और ऊपरके जबड़ेमें खाली कड़ी हड्डी होती है। वे नीचेके दाँतोंसे चारा कुतर-कुतर कर पहले जल्दी-जल्दी अपना पेट भर लेते हैं। फिर आरामसे बैठनेपर उस खाये हुए चारेको मुँहमें वापिस लाकर दोनों जबड़ोंकी किनारेवाली मजबूत दाढ़ोंसे महीन जुगाली करके आमाशयमें पहुँचाते हैं।

दस-बारह वर्षकी उम्रके बाद जैसे-जैसे गाय ढलने लगती है, वैसे-वैसे उसके दाँत भी घिसकर ठुण्टी-सरीखे हो जाते हैं।

गौके प्रमुख रोग और उनकी चिकित्सा[1]

(डॉ० श्रीराजकुमारजी शर्मा 'दीक्षित' रिटायर्ड पशु-चिकित्सक)

[क]

गौके रोगोंकी होम्योपैथिक चिकित्सा

गाय एक मूक प्राणी है। वह अपने दुःखकी व्यथा कह नहीं सकती। किंतु उसका दुःख-दर्द आपको समझना होगा। वह निरीह प्राणी है, अपनी व्यथा कैसे बतायेगी। उसे तो दर्द सहन करनेकी असीम शक्ति प्राप्त है। पर आपको तो कुछ अवश्य ही करना चाहिये। इसी दृष्टिसे यहाँ जनकल्याणके लिये गोधनके कुछ रोगोंकी औषधियोंको दिया जा रहा है। किसी योग्य चिकित्सकका परामर्श लेकर इनका प्रयोग करनेसे अवश्य लाभ होगा ऐसा हमारा व्यक्तिगत अनुभव है। जहाँ दवाईके सम्मुख उसकी शक्ति लिख दी गयी है उसे ही प्रयोग करें, जहाँ शक्ति नहीं लिखी है ३०या २००शक्तिका जर्मनीका १० एम० एल० सील बंद डायलूशन लेकर एक या दो छोटे बताशे या खाँड़-बूरा आदि प्लेटमें रखकर १०से १५ बूँद उसपर डालकर गायको दिनमें एक बार चटा दें। यह ध्यान रखें गायके मुँहमें खाद्य पदार्थ पहलेसे न हो और बताशा भूमिपर न गिर जाय।

(१) **भूख न लगना**—(Anorexia) (नक्स १×+) कार्बोवेज १×+ पेप्सिन १× मिलाकर दिनमें ३ बार दें।

(२) **मुँहके छाले** (Thrush)—घाव जीभपर गालोंके अंदर हो तो बोरेक्स दें, लारके साथ घावकी स्थितिमें मर्क्युरियस दें।

(३) **कब्ज़** (Canstipation)—हाइड्रास्ट २× दें।

(४) **अतिसार** (Diarrhqea) नये रोगमें चाइना और जीर्ण रोगमें फॉस दें।

(५) **रक्तमय अतिसार** (Dysentery)—नक्स २००की एक मात्रा देकर मर्क्युरियस कारोसाइवस दें।

(६) **कमजोरी** (Weakness)—एल्फाएल्फा क्यू एवं फोस-एसिड एक दिनके अन्तरसे अलग-अलग दें।

(७) **अफारा** (Tympenitis)—वायुसंचयपर एसाफिटेड़ा कब्ज़ भी हो तो कार्बोवेज और दर्दमें कोलोफाई दें।

(८) **खाँसी** (Cough)—ड्रोसेरा २००की केवल एक ही मात्रा, यदि दोहरानी पड़े तो ४-५ दिन पश्चात् दें।

(९) **ज्वर** (Fever)—अचानक हुआ हो तो एकोनाइट और धीरे-धीरे हुआ हो तो जेल्सियम देना चाहिये।

(१०) **सूखा रोग** (Marasmas)—छोटी बछिया खाती तो यथेष्ट है, पर सूखती जाती है, ऐसी स्थितिमें एब्रोटेनम देना चाहिये।

(११) **बाल झड़ना**—(शरीरमें मिनरलकी कमीसे) फ्लोरिक एसिड दें।

(१२) **गायका दूध कम हो जाना** (Agalactia)—अचानक कम होना या पवास न आना (दूध न उतरना)—एग्रस, सद्यः प्रसूताके थनोंमें दूध न आनेपर अर्टिका क्यू दिनमें तीन बार दें।

(१३) **बछड़े-बछियाओंके गर्मीके दस्त** (Calvis cholera) आर्स दें।

(१४) **गायका दुर्बल होना या रक्ताल्पता होना** (Anemia)—फेरम-मेट दें।

(१५) **गायके मूत्रमें रक्तका आ जाना**—प्यासमें—आर्स, मूत्रके साथ जलन हो, जोर लगाकर कूँथ रही हो तो कैन्थेरिस देना चाहिये।

(१६) **गायके मूत्राशयमें जलन** (Irritation in bladder)—सार्सापरिला एवं इक्युयर्क एक दिन छोड़कर अलग-अलग दिनमें एक बार दें।

(१७) **मूत्र कष्टसे आना** (Dysuria)—एपिस अथवा कैन्थरिस दें।

(१८) **जल जाना, छाला-फफोला पड़ जानेसे पूर्व और पश्चात्** (Burns)—कैन्थरिस दें।

१-यदि कोई सज्जन इस सम्बन्धमें परामर्शके इच्छुक हों तो डॉ० श्रीराजकुमारजी शर्मा, रिटायर्ड पशु-चिकित्सक एवं होम्योपैथ, ॐ श्रीहरिः धाम, ४३/१, पुरानी मोहनपुरी, मेरठ-२५०००१ (उ० प्र०)-के पतेपर सम्पर्क कर सकते हैं।

(१९) **गायके शरीरमें पानी भर जानेसे सूजन** (Dropsy)—एपिस अथवा आर्स दें।

(२०) **स्तन (थन) की सूजन** (Mastitis)—लाल सूजनमें 'एपिसबेलाडोना' दें। पत्थर-जैसी कड़ी सूजनमें कोनियम, जब पस पड़नेवाली हो तो बेलाडोनाके पश्चात् ब्रायोनिया दें।

(२१) **स्तनोंका तरेड़ जाना** (Nipples cracked)—ऐसी स्थितिमें रेटेन्हिया दें।

(२२) **गर्भपात होनेकी आशंका** (Abortion)—कोलो फाइलम दें।

(२३) **प्रसव/प्रसवोत्तरपीड़ा** (After Pains)—कोलो फाइलम दें।

(२४) **गोबरके साथ मलाशय बाहर निकल जाना** (Paralapsis)—एलोय एवं फोड़ो फाइलम पर्याय-क्रमसे दिनमें एक बार देना चाहिये।

(२५) **गर्भाशय-भ्रंश** (Paralapsus uteri)—सीपिया दें।

(२६) **बाँझपन** (Sterility)—दुर्बल गाय या बछियाको ब्राइटाकार्व तथा स्वस्थको एग्रस दें।

(२७) **पेटके कीड़े** (Worms)—गोल और सूत्र-कृमियाँ आदि समस्त कृमिके लिये चेलोन मूल अर्ककी १०से १५ बूँद ५ दिनतक क्रमशः दें।

(२८) **चोट** (Injuries)—गुम चोटमें अर्निका तथा घाववाली चोटमें हाइपेरिकम दें।

(२९) **खून बहनेवाला घाव**—कैलेण्डूला मूल अर्क, यह रक्त बहनेको रोक देगा, खानेको भी दें, घावपर भी लगायें।

(३०) **टेटनस**—होम्योपैथीमें टेटनसका टीका देनेकी जगह लीडमकी एक खुराक पिला दी जाती है।

(३१) **घाव भरनेमें** (Wounds)—हैक्ला लावा ६ एक्समें तथा घाव सुखाने-हेतु साइलीशिया एक हजारकी एक मात्रा दें।

(३२) **बारम्बार गर्भपात होना** (Miscarriage, Repeated)—सिफिलिनम १ एम + बैसीलिनम १ एम की एक खुराक दें।

(३३) **बछिया या गायका गर्भ न होना** (Menstruation)—'जैनोसिया अशोका मूल अर्क' एक सप्ताहतक दिनमें तीन बार दें।

(३४) **खुजली** (Mamze)—एन्टीपाइरीन २ एक्स दें।

(३५) **कानमें मिट्टी-धूल पड़नेसे पीब आना** (Ear Discharge)—हीपर अथवा पल्स दें।

[ख]

पशु-चिकित्सकका सिर दर्द—दुधार गायमें कैन्सर

आजकल गायके थनका कार्सिनोमा पशु-चिकित्सकके लिये एक कठिन प्रश्न बन गया है। शोथयुक्त कार्सिनोमा (Inflammatory Carcinoma) गर्भवती या दुधार गायके थनमें तीव्र गतिसे बढ़नेवाला कैन्सर है, जिसका प्रारम्भ एक पिण्डके रूपमें होता है। स्तनके उपरिस्थ उत्तक शोथयुक्त हो जाते हैं और वह सूज जाता है तथा तीव्र स्तनशोथके समान दिखायी देता है। कितनी ही बार अन्य थन यहाँतक कि पूरा अयन (बाँक-Udder) भी रोग-ग्रस्त हो जाता है। शोथयुक्त कार्सिनोमाकी अभीतक कोई विशेष उपयोगी चिकित्सा ज्ञात नहीं हुई है। निर्मूलक स्तनोच्छेदनसे कोई लाभ नहीं होता और न उसका परामर्श ही दिया जाता है। महिलाओंमें शमनकारी (Palliative) एक्सरे चिकित्सा की जा सकती है और हार्मोन रोध्य उपायोंसे उसमें सहायता मिल सकती है, किंतु मूक गौ माताके समक्ष एलोपैथी चिकित्सा भी मूकदर्शक मात्र रह गयी। बेचारी गौ माताका दुःख समझते हुए भी पशु-चिकित्सक अपना समस्त ज्ञान एवं सेवा देकर भी कुछ नहीं कर पाता। मुझे इन क्षणोंका प्रत्यक्ष अनुभव है, क्योंकि गत चालीस वर्षोंसे भी अधिक समयसे मुझे गौ माताकी चिकित्सा करनेका अवसर मिला है। होम्योपैथी चिकित्सासे मुझे इस दिशामें पर्याप्त सफलता मिली है।

स्तन जब दूध-भरे हों, गायके बैठते समय या बच्चेके दूध पीते समय थन या बाँक (Udder) में उसका सिर या थूथनके प्रहारसे हल्की-सी चोट आ जानेसे या मौसमके प्रभावसे भी हल्की-सी सूजन आ जानेपर यदि उसकी चिकित्सा कर दी गयी तो केवल एकोनाइट या अर्निकाकी

एक मात्रासे ही सब ठीक हो जाता है। हाँ, देर हो जानेपर अन्य ओषधियोंका सहारा लेना पड़ता है। इसके लिये किसी सुयोग्य चिकित्सकका परामर्श लेना आवश्यक है।

होम्योपैथीकी दवाई बूँदोंमें दी जाती है। १०-१५ बूँद किसी माध्यमसे गायकी जिह्वापर छू जाय बस दवाई कार्य कर जायगी। गाय सीधी है तो एक चम्मच पानीमें दी जा सकती है, प्लेटमें बताशा, बूरा (खाँड) आटेकी हल्की-सी परतपर दवाई टपकाकर चटाई जा सकती है। मठरी-जितनी मोटी रोटी बनाकर ऊपरका पतला पापड़ हटाकर मोटे भागपर दवाई टपकाकर, दवाईवाला भाग भूमिकी ओरकर गायको देनेसे उसकी जीभपर दवाई छू जायगी। महकवाली वस्तु हाथोंके छू जानेसे दवाईका प्रभाव नहीं होता, अतः दवाई देनेसे पूर्व हाथ भी साफ कर लें।

गायको अचानक शीतका अनुभव हुआ हो, ज्वर हो, तीव्र स्तनपर प्रदाह (सूजन)-सी दिखायी दे तो 'एकोनाइट' २०० की एक मात्रा दे दी जाय।

यदि थन या बाँक (Udder)-में किसी चोटके लग जानेका ज्ञान हो, चर्मपर हल्का बैंगनी चोटका चिह्न भी हो, सूजन हो या न हो तो अर्निकाकी एक या दो मात्रा भी यथेष्ट होगी। यदि छिल गया है तो 'कैलेण्डुला' मूल अर्कको वहाँ चुपड़ देनेमात्रसे घाव ठीक हो जायगा। दवाई पिलाई भी जाय तो और लाभ मिलेगा।

यदि सूजन बढ़ती दिखायी दे तो ब्रायोनियाँ दे। लाल धारियाँ-सी, सूजनपर दिखायी दे तो 'बेलाडोना' उसके लिये पर्याप्त होगा। किसी प्रकार भी बेलाडोनासे लाभ न हो रहा हो तो 'मर्क्युरिस' दे, यह उस समय दी जाती है जब लाल-लाल सूजन बड़ी तेजीसे बढ़ती जा रही हो। दवाईसे तुरंत ही घटनी प्रारम्भ हो जाती है।

यदि लाली नहीं है और सूजन तेजीसे बढ़ रही हो तो केवल 'कैल्केरिया फ्लु ओरिका' देनेसे कड़ापन समाप्त हो जायगा, बढ़ना बंद हो जायगा। यदि ट्यूमर बन गया हो, दर्द होता हो तो उसे 'म्यूरेक्स' ही शान्त कर देता है।

गायकी आँखोंमें चमक न हो, कीचड़ या पानी आता हो और दूधकी अनुपस्थिति हो या दूधका प्रवाह कम हो गया हो तो उसे 'पल्साटिला' से लाभ हो जायगा। यदि सूजनके साथ मवाद (पस) आने लगे तो, 'हीपर' उस कड़ेपनको घोलकर, मवाद-रूपमें बाहर निकाल देगा। यदि मवाद नहीं और चिपचिपा शहद-सा घावसे आता हो, थन फटकर घाव-सा हो गया हो तो 'ग्रेफाइटिस' देना लाभकारी है।

स्तनोंमें जलन-सी प्रतीति हो, पस पड़नेवाली हो तो 'कार्बोवेज' का भी प्रयोग किया जा सकता है। घावको सुखानेके लिये अन्तमें 'साइलीशिया' एक हजारकी एक-एक सप्ताह पश्चात् मात्रा दी जाय।

पत्थरकी भाँति कठोर, चुभनेवाले दर्दयुक्त ट्यूमरमें जब जरा-सी सर्दीसे ग्रन्थियाँ प्रवाहित हो जाती हों और तीव्र खुजली भी हो तो 'कोनियम' ३० बी शक्तिमें दिनमें एक बार ठीक होनेतक दी जाय।

यदि इनमें अभीतक किसी भी उपचारसे लाभ न दिखायी दिया हो तो 'कोनियम' एक हजारमें पहले दिन दे पहली मात्रा, दूसरी १५ दिन पश्चात् दस हजारकी शक्तिका मात्रा दे फिर १५ दिन पश्चात् 'कार्सिनोसिन' की दस हजार शक्तिकी एक खुराक दे।

यदि कैन्सरका ट्यूमर घूमता हुआ प्रतीत हो तो उसके लिये 'कैल्केरिया फ्लोर' एक हजारकी पहले दिन एक मात्रा दे, दस दिन बाद दूसरी मात्रा दे, १० दिन बाद फिर १० हजार शक्तिकी एक मात्रा दे। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि इन दवाओंके प्रयोगसे रोग-ग्रस्त गौओंको लाभ होगा।

[ग]

आक्सीटोसिन (पवासके इंजेक्शन) से गायको बाँझ न बनायें

गायके बाँक (Udder) में दूध भरा रहता है, जब उसके बच्चेको दूध पिलानेके लिये छोड़ते हैं तब बच्चा स्तनोंमें जा लगता है। आपने देखा होगा कि गाय उसे चाटती है और चूमती है। उस समय उसका ममत्व जाग उठता है। बच्चेके स्तन-चूषणद्वारा प्राकृतिक दुग्ध-निष्कासन-प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

कुछ गायें अधिक चतुर एवं संवेदनशील होती हैं, उनका दूध पीता हुआ बच्चा हटाकर दुग्ध-दोहन करनेपर वे उत्तेजित हो जाती हैं, जिससे दूधका निकलना रुक जाता

है। गायके स्तनमें अवरोधिनी मांसपेशी होती है जिससे गाय अपनी इच्छानुसार दूधका बाहर आना रोक लेती है। जिसे 'गायने दूध चढ़ा लिया' ऐसा कहा जाता है। बच्चेको दूसरी बार छोड़नेपर वह पुनः पवास (पेन्हा) जाती है (थनमें दूध उतर आता है)।

आक्सीटोसिन एक दूध-उत्क्षेपक हार्मोन है और बच्चा न रहनेपर गायका ममत्व नहीं जागता, जिससे वह दूध नहीं उतार पाती। इसके लिये कुछ लोग आक्सीटोसिन हार्मोनका इंजेक्शन क्रयकर गायके शरीरमें प्रविष्टकर दूध निकाल लेते हैं।

पाठकोंसे मेरा सानुरोध निवेदन है कि गायको दूध पवासने (दूध उतारने) के लिये इस हार्मोनका इंजेक्शन कदापि न लगायें और अन्यको भी न लगानेके लिये प्रोत्साहित करें। यह स्तनोंसे ही दूध नहीं उतारता, अपितु गर्भाशयपर भी, बच्चे होने, जेर डालने आदिमें उत्प्रेरकका कार्य करता है। शरीरमें इसकी अनावश्यक मात्रा पहुँचानेसे यह स्तन और गर्भाशयकी प्राकृतिक प्रक्रियाको नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। सगर्भाका गर्भ गिर जाता है। डिम्ब अपरिपक्व-अवस्थामें टूटकर नष्ट होते-होते गाय बाँझ हो जाती है। ऐसा दूध पीनेसे अतिरिक्त हार्मोनमय दूध पीनेवाले व्यक्तिके शरीरपर भी कुप्रभाव पड़ता है। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है, क्रोध-आवेशका सहज ही आना इसका प्रमाण है। अन्य हार्मोन ग्रन्थियोंपर भी इसका प्रभाव पड़ता है, क्योंकि एक हार्मोनकी अन्य हार्मोनोंपर सहज ही क्रिया होती रहती है।

बहुत सस्ते दामोंमें आनेवाला यह इंजेक्शन प्रायः सब जगह मिल जाता है। दूध बेचनेवाले पशुपालक धड़ल्लेसे इसका खुलेआम नित्य प्रयोग कर रहे हैं। नवजात गाय-भैंसके बच्चोंको भूखा मारकर मरने दिया जाता है और उसके हिस्सेका भी दूध ले लिया जाता है। उन्हें तो बच्चा नहीं इस हार्मोनकी आवश्यकता है। ताकि दूध अधिक मिले। कृपया उन्हें समझाइये, गौ माताको बाँझ होनेसे बचाइये।

यदि उनके समक्ष किसी कारणवश ऐसी समस्या आ खड़ी हुई कि गाय दूध नहीं उतार रही है तो होम्योपैथिक दवाई 'एग्रस कैक्टस' ६ शक्तिकी सुबह-शाम १०-१५ बूँद एक चम्मच पानी या बताशेपर डालकर देते रहनेसे उन्हें फिर कभी आक्सीटोसिनका इंजेक्शन नहीं लगाना पड़ेगा, वह स्वयं ही दुहते समय दूध उतारती रहेगी।

आपके पास होमियोपैथी की कुछ ओषध (बछड़े के लिए २०० और बड़ी गोमाता के लिए १००० पॉवर की) होनी चाहिए | आपातकाल के लिए लाकर रखें |

ओषधि देने के नियम --- नीचें दी गयी ओषधि को आधा कप पानी में डाले और गोमाता के मुख को खोलकर मुख में डाल दे या केले में डालकर भी खिला सकते हैं |

- क्ल्केरिया कार्बोनिका
- मैग्नीशियम फोस्फोरिका
- कार्बो वेजटेबल
- नक्स वोमिका
- नाजा
- लेक्सिस
- ब्रयोनिया
- बेलाडोना
- फेरम फोस
- हैपेरिकम
- रशट्रक्स
- सल्फर

गोशाला में आपातकाल के लिए कुछ जरूरी वस्तुए रखनी चाहिए जैसे ---

हिंग, अजवायन, अमृतधारा, मेथी, रुई, बांधने के लिए कपड़ा, हल्दी चूर्ण, निम् तेल, शुद्ध कपूर|

गोशाला में आपातकाल के लिए कुछ जरूरी वनस्पति रखनी चाहिए जैसे -

- तुलसी
- दूर्वा
- निर्गुन्डी
- कटहल का पेड़
- बांस का पोधा
- काला भृंगराज

अधिक जानकारी के लिए आप मुझे फोन भी कर सकते हैं या मेल भी भेज सकते हैं

मो.-९४१६४७८१८७ , ७३५७०७७४०६, ७९०००३१२१३

इमेल- arya.gori999@gmail.com

फेसबुक पर हमसे जुड़े -

युवा सेवा संघ रोहतक

अमर क्रांतिकारी राजीव दीक्षितजी

आध्यात्मिक भारत- स्वदेशी भारत

तीनों पेजों को लाइक करे |

वंदेमातरम्

भारत माता की जय

गोमाता की जय

राजीव भाई अमर रहे

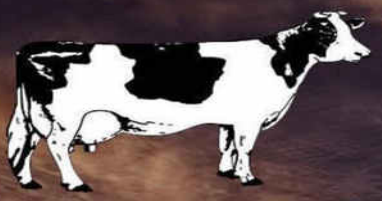

विदेशी गाय एवं गोमाता (भारतीय गाय) में अंतर

लक्षण	विदेशी गाय	गोमाता (भारतीय गाय)
१. पीठ	सीधी	पीठ पर ककूद(उँचा भाग) होता है। बैलों का ककूद बडा होता है।
२. लम्बाइ तथा आकार	बडा	साधारण
३. सींग	छोटे	कुछ अपवाद छोडकर प्रायः बडे
४. थन	बडा	साधारण
५. दूध की मात्रा	भरपूर	साधारण
६. बैल	परिश्रमी नही होते।	भरपूर परिश्रमी होते हैं।
७. स्वभाव	सीधा नही होता। लोभवश चरती है।	शांत और वात्सल्यपूर्ण होता है। शांतिपूर्वक चरती है।
८. रम्भाने की ध्वनि	दबा हुआ व अस्पष्ट	मांऽऽऽऽऽ; ऐसा उच्च एवं स्पष्ट
९. आध्यात्मिक महत्व	नहीं।	है; क्योंकि गोमाता में सर्व देवताओं का वास होता है।

संकलनकर्ता- आर्य गौरी शंकर

मो:-७३५७०७७४०६